ISSN 2349-6614

मार्च 2021

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

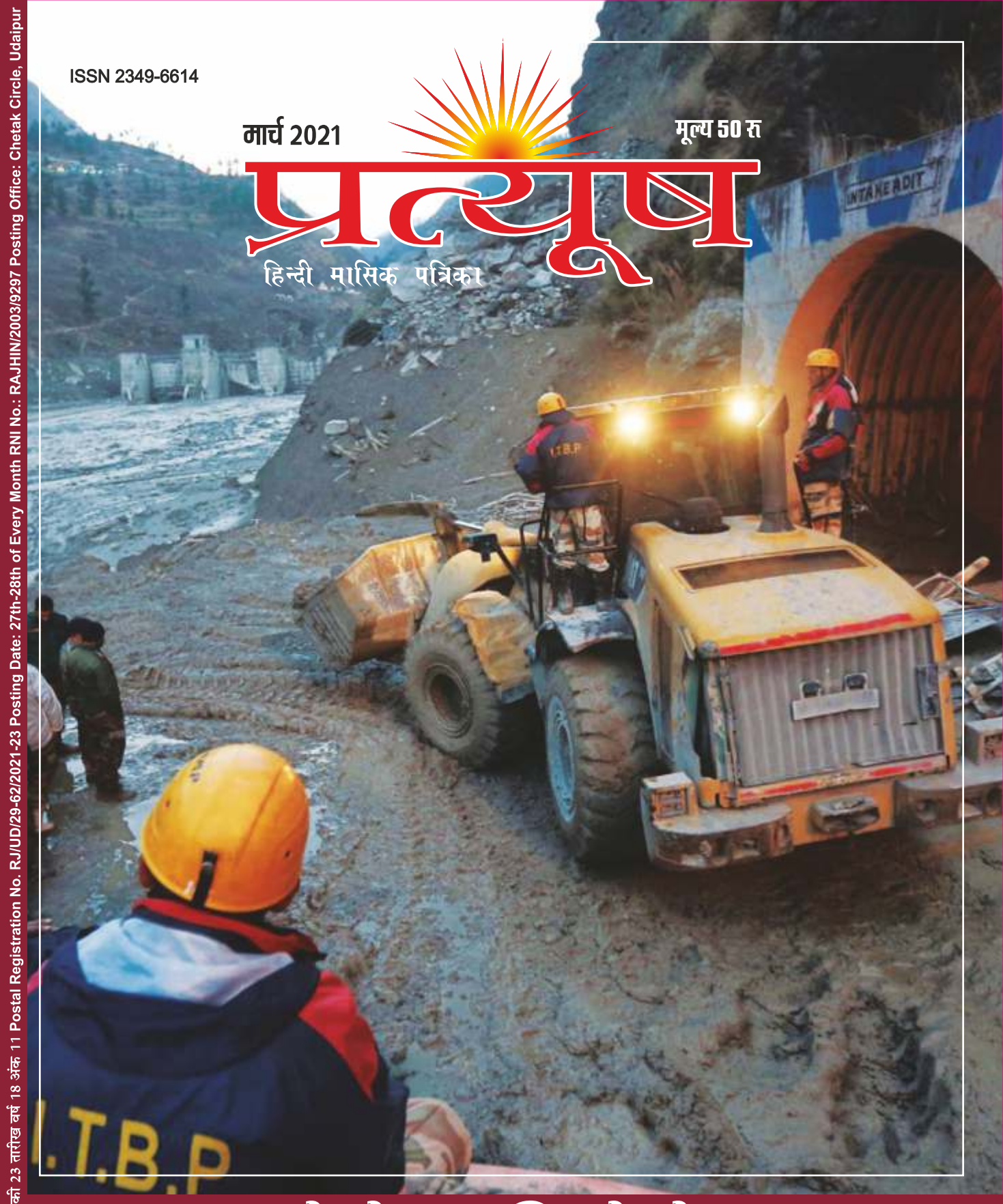

पहाड़ों में प्रकृति से छेड़छाड़ का नतीजा सिर्फ मौत

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 18 अंक 11 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No.: RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

Shree Cement

SHREE
जंग रोधक
CEMENT

घर की ढाल,
सालों साल

Marketing Office: 122-123, Hans Bhawan, 1 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi - 110002.
Tel: +91-11-2337 0828, 2337 0829.
Corporate Office: 21, Strand Road, Kolkata - 700001. | Tel: +91-33-2230 9601-04
www.shreecement.com

रंग और उमंग
के त्योहार, होली की
हार्दिक शुभकामनाएं

मार्च
2021
वर्ष 18, अंक 11

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

वीक रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

राजनीति

.... तो मोदी
क्या चीज़?
10

सीमाक्षेत्रे

भारत की
कूटनीतिक जीत
12

स्थापना दिवस
अतीत ही नहीं, राजस्थान
का वर्तमान भी गौरवशाली
14

खेल-खिलाड़ी

नई चुनौती
टाइम ट्रायल टेस्ट
24

रंगोत्सव

दिव्यता का रंगमय
पर्वः होली
36

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइर प्रिन्ट मीडिया प्रा.लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

KESHAV NURSERY

घर आंगन हो हरा भरा..

All Type of Plants, Trees, Pots & Gardening Services Available..

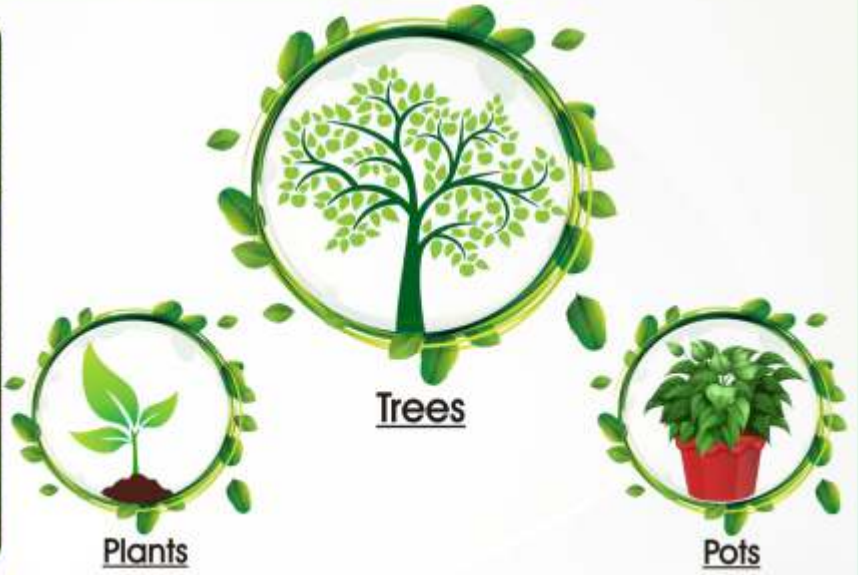

Outdoor Plants, Indoor Plants, Ornamental Plants, Flower Plants, Trees, Fruit Plants, Bonsai, Air Plants, Hanging Plants, Air Plants, Herbal Plants, Climbers, Cactus & All other Trees Available.

Call - 9413317086, 9461389196 | Email - Keshavnursery@gmail.com

Add- Babel Sahab ki Badi, Opp. Navdeep School, Kalka Mata Road, Pahada, Udaipur | www.keshavnursery.co.in

भ्रष्टाचार के खिलाफ सटीक-सार्थक अभियान ज़रूरी

भ्रष्ट अधिकारियों पर सतत् निगरानी और कार्रवाई के दावों के बावजूद देश के सरकारी-गैर सरकारी क्षेत्र में भ्रष्टाचार किस कदर हावी है, इसे उजागर करती है, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की 'करप्शन परसेप्शन इंडेक्स-2020' की सूची। इसमें 2019 की तुलना में भारत 6 पायदान नीचे फिसला है। पिछले साल 80वें स्थान पर रहा, भारत इस बार 180 देशों में 86वीं पायदान पर पहुंच गया। दुनिया के देशों का करप्शन इंडेक्स तैयार करने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था ट्रांसपेरेंसी इन्टरनेशनल ने इस बार के मापदण्डों में कोविड-19 महामारी से निपटने के दौरान हुए भ्रष्टाचार पर भी विशेष ध्यान दिया।

संस्था की चेयरपर्सन डेलिया फरेरिया रूबियों के अनुसार कोविड-19 न सिर्फ स्वास्थ्य और आर्थिक संकट वाला था, यह भ्रष्टाचार को लेकर भी एक बड़े संकट के रूप में दिखा। इस बार भारत ने 100 में से 40 अंक हासिल किए। 2019 में 41 मिले थे। इससे पहले 2018 में 78वें, 2017 में 81वें और 2016 में भारत 79वें स्थान पर रहा था। हालांकि भ्रष्टाचार को लेकर चीन जैसे देश का रिकार्ड भी ठीक नहीं है। सूची के मुताबिक वह 78वें स्थान पर है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान क्रमशः 124वें, 146वें व 165वें स्थान पर हैं। सबसे अच्छा रिकार्ड क्रमशः न्यूजीलैण्ड, डेनमार्क, फिनलैण्ड, स्विट्जरलैण्ड व सिंगापुर का है, जबकि सबसे बुरा वेनेजुएला, यमन, सीरिया, द. सूडान और सोमालिया का है। संस्था ने भ्रष्टाचार उन्मूलन की दिशा में उठाए गए कदमों के आधार पर दुनिया के 180 देशों की रैंकिंग तैयार की है।

जहां तक भारत का सवाल है - तो वह भ्रष्टाचार के रोग से पिछले चार-पांच दशकों से कुछ ज्यादा ही ग्रस्त है। ताज्जुब तो इस बात का है कि चुनाव में कोई भी राजनैतिक दल इसे मुद्दा बनाने से नहीं चूकता, लेकिन चुनाव खत्म होते ही वह यह भूल जाता है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग में उसे सैनिक की भूमिका का भी निर्वाह करना है। लेकिन जिस तरह से राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप लगते रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि वे भ्रष्टाचार से लड़ने की बजाय उसके पोषक बनकर अपना और दूर तक के रिश्तेदारों का वारा-न्यारा करने में जुटे हैं। जो पकड़ में आए, बचने की जुगत करते रहे और जिन पर आरोप सिद्ध हुए वे जेलों में तो बंद हैं, लेकिन उनके साथ सलूक वीआईपी वाला ही हो रहा है।

हमारे सरकारी महकमों में भ्रष्टाचार किस कदर हावी है, उसे हाल की ताजा घटनाओं ने फिर साबित कर दिया है। गुवाहाटी में रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी को एक करोड़ रुपए की घूस मांगने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। इस अफसर ने एक निजी कम्पनी को ठेका दिलाने की एवज में इस राशि की मांग की थी। राजस्थान के दौसा जिले की एसडीएम और पुलिस अधीक्षक को लाखों रुपए की रिश्वत लेने के मामले में पकड़ा गया। इसी जिले के मंडावर थाना के एसएचओ व हेडकान्स्टेबल को लूट के एक मामले में राजीनामा करने का दबाव बनाने व रिश्वत लेने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। राजस्थान में ही एक कलेक्टर और उसके पीए को भी ऐसे ही एक मामले में दबोचा गया। छीपा बड़ौद में पटवारी 30 हजार की रिश्वत लेते पकड़ा गया। ऐसी घटनाएं देश के हर राज्य में हो रही हैं, जो बताती हैं कि बड़े स्तर पर हो या पंचायत, उपखण्ड, तहसील और जिला स्तर पर भ्रष्टाचार मुक्त शासन-प्रशासन की कल्पना नहीं की जा सकती। क्योंकि इसके लिए जिस इच्छाशक्ति की ज़रूरत है, वह न राजनैतिक और न प्रशासनिक गलियारों में दिखाई पड़ती है। सरकारी अधिकारी-कर्मचारी जिस तरह लूट-खसोट में लगे हैं, वह नेताओं और सरकारों के भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्ती के दावों की पोल ही खोलते हैं।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल इण्डिया रिपोर्ट की बात करें तो पता चलता है कि पिछले साल 51 फीसद लोगों ने घूस देकर अपने काम निकलवाए। सर्वाधिक 26 प्रति. लोगों को सम्पत्ति और भूमि सम्बंधी कामों के लिए रिश्वत देनी पड़ी, 20 प्र.श. पुलिस की ज्यादती का शिकार हुए और पैसे का निवाला उनके मुंह में ठूसना पड़ा। नगर निगम, नगर विकास न्यास, विद्युत निगम, परिवहन विभाग, अस्पताल ऐसे विभाग हैं, जहां आमजन का कोई न कोई काम रहता ही है और यहां बिना घूस के काम हो जाए तो आश्चर्य ही होगा। भ्रष्टाचार पर नकेल कसने की जिम्मेदारी वाली भारत में अनेक एजेन्सियां हैं, वे भी भ्रष्टाचार के रोग से पूरी तरह मुक्त हैं, यह कह पाना भी मुश्किल है।

भ्रष्टाचारियों से निपटने के लिए नियम, कानून, एजेन्सियों से भी ज्यादा ज़रूरी है, मज़बूत राजनैतिक इच्छाशक्ति की। भ्रष्टाचार के विरूद्ध एक सार्थक और सटीक अभियान की ज़रूरत है। इसमें आम आदमी को भी अपनी जिम्मेदारी सुनिश्चित करनी पड़ेगी। भ्रष्टाचार ऐसी दीमक है, जो जनता से वसूल किए जाने वाले टैक्स से निर्मित विकास की इमारत की नींव को लगातार खोखला कर रहा है।

आम आदमी पर भारी

बैंकों में रकम डूबने के मामले

मनमोहन सिंह की सरकार के आखिरी चार साल(2011-2014) के बीच एनपीए बढ़ने की दर 175 फीसद रही। जबकि मोदी सरकार के शुरुआती चार साल में इसके बढ़ने की दर 178 फीसद रही।

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया(आरबीआई) ने वार्षिक रिपोर्ट पेश की है। इसमें गैर निष्पादित आस्तियां(एनपीए) का भी जिक्र है। वर्ष 2014 से लेकर 2020 यानी भारतीय जनता पार्टी की सरकार के बीते छह साल में एनपीए की कुल रकम 46 लाख करोड़ रही। रिजर्व बैंक या सरकारी वित्तीय संस्थाएं सरकारी बैंकों को मदद के लिए जो रकम देती हैं, वह आम आदमी के चुकाए कर की रकम होती हैं। जब कर्ज की वसूली नहीं हो पाती और उसे एनपीए घोषित किया जाता है तो बैंक घाटे में चला जाता है। कई बार बैंक बंद होने के कगार पर पहुंच जाते हैं और ग्राहकों के अपने पैसे फंस जाते हैं।

बीते दशक में चार साल मनमोहन सिंह की सरकार और छह साल नरेन्द्र मोदी सरकार रही है। मनमोहन सरकार के आखिरी चार साल(2011-2014) के बीच एनपीए बढ़ने की दर 175 फीसद रही। जबकि मोदी सरकार के शुरुआती चार साल में इसके बढ़ने की दर 178 फीसद रही। फीसद में ज्यादा फर्क नहीं दिख रहा है, लेकिन तथ्य यह है कि मनमोहन सिंह की सरकार ने एनपीए को दो लाख 64 हजार करोड़ पर छोड़ा था और प्रधानमंत्री मोदी के राज में यह नौ लाख करोड़ रुपए तक पहुंच चुका है। बैंकों के 46 लाख करोड़ रुपए डूब गए हैं। इसमें 85 फीसद रकम सरकारी बैंकों की हैं। केन्द्र सरकार ने अब तक 875 हजार करोड़ रुपए का कारपोरेट कर्ज माफ किया है।

जब कोई व्यक्ति या संस्था किसी बैंक से कर्ज लेकर उसे वापस नहीं करती, तो उस कर्ज खाते को बंद कर दिया जाता है। इसके बाद उसकी नियमों के तहत वसूली की जाती है। ज्यादातर-

कर्ज़ का राइट ऑफ

जब बैंकों को लगता है कि उन्होंने कर्ज बांट तो दिया, लेकिन वसूली मुश्किल हो रही है, तब बैंक एनपीए का रास्ता अपनाता है। बैलेंस शीट गड़बड़ होने लगती है। ऐसे में बैंक उस कर्ज को खारिज कर देता है। रिजर्व बैंक के आंकड़े बताते हैं कि सरकारी बैंकों ने साल 2010 से कुल 6.67 लाख करोड़ रुपए के कर्ज को राइट ऑफ(कर्ज खारिज) किया है। जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों ने 1.93 लाख करोड़।

मामलों में वसूली नहीं हो पाती है या होती भी है तो न के बराबर। नतीजतन बैंकों का पैसा डूब जाता है और बैंक घाटे में चला जाता है। कई बार बैंक बंद होने की कगार पर पहुंच जाते हैं और ग्राहकों के अपने पैसे फंस जाते हैं। ये पैसे वापस तो मिलते हैं, लेकिन तब नहीं, जब ग्राहकों की जरूरत होती है। पीएमसी के साथ भी यही हुआ था, उसने एचडीआइएल नाम की एक ऐसी भवन निर्माता कंपनी को चार हजार करोड़ रुपए से ज़्यादा का कर्ज़ दे दिया था, जो बाद में खुद ही दिवालिया हो गई थी। कर्ज को देने में भी पीएमसी ने आरबीआई के नियमों को नज़रअंदाज किया था।

वर्ष 2020 में बैंकों की जितनी रकम डूबी, उसमें 88 फीसद रकम सरकारी बैंकों की थी। जब सरकारी बैंक डूब जाते हैं, तो सरकार या आरबीआई इनके मदद के लिए सामने आते हैं, जिससे सरकारी बैंक ग्राहकों के पैसों को लौटा सकें। केन्द्र में भाजपा की मौजूदा सरकार के सत्ता में आने के बाद साल 2015-16 में एनपीए की वसूली 80 हजार 300 करोड़ हुई, जो 2015-16 के एनपीए का एक चौथाई भी नहीं था। इसके बाद साल बाद वसूली थोड़ी बढ़ा दी गई, लेकिन 2019-20 में यह फिर घट गई। वर्ष 2010-11 से लेकर 2013-14 के बीच चार साल में मनमोहन सरकार में 44 हजार 500 करोड़ रुपए का कर्ज़ माफ हुआ। नरेन्द्र मोदी की सरकार के सत्ता में आने के बाद पहले ही साल यानी अकेले 2014-15 में 60 हजार करोड़ रुपए का कर्ज़ खारिज(राइट ऑफ) हो गया। 2017-18 से लेकर 2019-20 के बीच सिर्फ तीन साल में मोदी सरकार में छह लाख 35 हजार करोड़ से भी ज्यादा का कर्ज़ खारिज हुआ। *('जनसत्ता' से साभार)*

वीरेंद्र कुमार डांगी

रजनी डांगी

डांगी इण्डस्ट्रीज

सोप स्टोन पाउडर

डोलोमाइट

चाइना क्ले

केल्साइट पाउडर के निर्माता एवं माइनिंग

- पर्ल मिनरल्स एंड केमिकल्स
- डांगी माइनिंग प्राइवेट लिमिटेड
- नेनो क्ले एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड
- देवपुष्प माइनिंग इण्डस्ट्रीज, किच्छा (उत्तराखंड)

एफ-39 (ए) आई. टी. पार्क, रोड नं. 12, मादडी इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर 313 003

फोन : 9649203061/9672203061, ईमेल: pearlmin@rediffmail.com, dangiindustries@rediffmail.com

ऋषिगंगा ग्लेशियर विखंडन – हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट ध्वस्त, तपोवन टनल के मलबे में दबे श्रमिकों के निकाले कई शव

बाढ़ पर सवार मौत लील गई कई जानें

विष्णु शर्मा 'हितैषी'

ऋषि गंगा ग्लेशियर के टूटने से बाढ़ पर सवार मौत रैणी और तपोवन गांवों के बीच 1 फरवरी को करीब एक घण्टे तक धड़ाके से नाचती रही। जो भी चपेट में आया उसे लील लिया। तबाही से हुए नुकसान की भरपाई में बरसों लग सकते हैं, पर बड़ा सवाल यही है कि विकास के नाम पर क्या हम अब भी यूं ही बेफिक्र होकर नदियों की धाराओं को रोकने का अपराध करते रहेंगे? बर्फ के पिघलने से नदियों-समुद्र का जलस्तर बढ़ जाता है, जिससे तटीय क्षेत्र मुश्किल में पड़ते हैं। उत्तराखण्ड में ग्लेशियर का टूटना मामूली चिंता का विषय नहीं, यह खतरा बहुत बड़ा और गंभीर है।

ऋषिगंगा ग्लेशियर के टूटने से बाढ़ पर सवार होकर आई मौत रैणी और तपोवन के बीच करीब एक घंटे तक नाचती रही। हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट तिनकों की तरह बिखरकर बह गया। पहले ऋषिगंगा और फिर धौली गंगा में उफान मारती लहरों ने किसी को बचने का मौका नहीं दिया। जो भी चपेट में आया, उसे लील लिया। राहत और बचाव कार्य शुरू होने के बाद मलबे से निकले शव बाढ़ की क्रूरता को बयां कर रहे थे। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक 56 शव निकाले जा चुके थे जबकि 148 लोग अब भी लापता हैं।

हर कोई सहम उठा

सुबह के वक्त ऋषिगंगा और धौलीगंगा का विकराल रूप जिसने भी देखा, वो सहम उठा। ऊंचाई पर खड़े लोगों ने दूर से धौली गंगा को उफनते हुए देख लिया था। तबाही को आते देख लोगों ने चीखते हुए नीचे प्रोजेक्ट में काम कर रहे लोगों को सावधान करने की पूरी कोशिश की। उन्होंने चीखते-चिल्लाते हुए लोगों को ऊपरी इलाकों में आने को कहा। पर बाढ़ की भीषण गर्जना और दूरी की वजह से उनकी आवाज नीचे तक नहीं पहुंच पाई। प्रोजेक्ट एरिया में मचती तबाही को देखकर कुछ लोग तो बिलख-बिलखकर रोने भी लगे। करीब एक घंटे तक पूरे क्षेत्र में अफरा-तफरी और भय का माहौल रहा। नदी का पानी सामान्य होने के बाद लोगों ने राहत की सांस ली।

जल प्रलय का वेग अलकनंदा नदी में आते-आते थम गया। इस कारण तट पर बसे शहर व कस्बे प्रकोप से बच गए। ग्लेशियर टूटने के कारण नदी के वेग को देख, लोगों के जेहन में केदारनाथ आपदा की यादें एक बार फिर ताजा हो गईं।

सुबह जब सभी लोग धूप सेक रहे थे। करीब साढ़े दस बजे ऋषिगंगा घाटी में भारी गर्जना हुई। पहले तो गांव वालों के समझ में कुछ नहीं आया। लेकिन कुछ देर बाद जब ऋषि गंगा में बड़े-बड़े बोल्डर, पेड़ और मलबा बहते देखा तो गांव में अफरा-तफरी मच गई।

गंभीर संकट का संकेत

वैज्ञानिक इस हादसे की पड़ताल करेंगे, इससे हादसे से जुड़ी कुछ बातें बहुत साफ हैं। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से ऐसे प्राकृतिक हादसों की आशंका पहले भी जताई गई थी, लेकिन आश्चर्य तो यह है कि जाड़े के मौसम में ग्लेशियर टूटा। जब पहाड़ों पर कड़ाके की ठंड पड़ रहीहै, बर्फबारी का आलम है, तब ग्लेशियर का टूटना किसी गंभीर संकट का संकेत है।

हमें फिर एक बार प्रकृति के साथ हो रहे खिलवाड़ पर विचार करना चाहिए। बार-बार यह कहा जाता रहा है कि धरती गर्म हो रही है। ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन हमें चुनौती दे रहा है। हिमालय को वैसे भी बहुत सुरक्षित पर्वतों में नहीं गिना जाता है। पिछले दशकों में यहां ग्लेशियर तेजी से पिघलते चले जा रहे हैं। नदियों के अस्तित्व पर सवाल खड़े होने लगे हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि ग्लेशियर को पिघलने से रोकने के लिए जितनी कोशिशें होनी चाहिए, नहीं हो पा रही है। इतना ही नहीं, पहाड़ों पर उत्खनन और कटाई का सिलसिला लगातार जारी है। पहाड़ों पर लगातार निर्माण और मूलभूत ढांचे, जैसे सड़क, सुविधा निर्माण से खतरा बढ़ता चला जा रहा है। बहुत दुर्गम जगहों पर मकान-भवन निर्माण से जोखिम का बढ़ना तय है। जब पहाड़ों पर सुविधा बढ़ रही है, तब वहां रहने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। हमने मैदानों का परिवेश बिगाड़ दिया है, तो लोग पहाड़ों पर बसने को लालायित हैं। इसका असर पहाड़ों पर साफ तौर पर दिखने लगा है। जहां पहाड़ों पर हरियाली और शांति हुआ करती थी, वहां कंक्रीट के जंगल नजर आने लगे हैं, मशीनों की कर्कश आवाज प्रकृति का सीना चाक कर रही है।

उत्तराखंड : चार बड़ी तबाही

1991 उत्तरकाशी भूकंप

अविभाजित उत्तरप्रदेश में अक्तूबर 1991 में 6.8 तीव्रता का भूकंप आया। इस आपदा में कम से कम 768 लोगों की मौत हुई और हज़ारों घर तबाह हो गए।

1999 चमोली भूकंप

चमोली जिले में आए 6.8 तीव्रता के भूकंप ने सौ से अधिक लोगों की जान ली। रुद्रप्रयाग जिले में भारी नुकसान हुआ था। भूकंप से सड़कों एवं जमीन में दरारें आ गई थीं।

1998 माल्पा भूस्खलन

पिथौरागढ़ जिले का छोटा सा गांव माल्पा भूस्खलन के चलते बर्बाद हुआ। इस हादसे में 55 कैलाश मानसरोवर श्रद्धालुओं समेत करीब 255 लोगों की मौत हुई।

2013 केदारनाथ त्रासदी

जून में एक ही दिन में बादल फटने की कई घटनाओं से बाढ़ और भूस्खलन की घटनाएं हुई थीं। जिसमें 5,700 से अधिक लोग इस आपदा में जान गंवा बैठे थे।

विशेषज्ञों ने आगाह किया

ग्लेशियर टूटने से मची तबाही के बाद विशेषज्ञों ने एक बार फिर सरकार को बड़े जलवायु खतरों का लेकर आगाह किया है। उन्होंने कहा कि सरकार पर्वतीय क्षेत्र में विकास परियोजनाओं खासकर बांधों के निर्माण को लेकर अपनी नीति पर फिर से विचार करे। हिमालय क्षेत्र में पांच हजार से ज्यादा ग्लेशियर हैं, जो वैश्विक तापमान बढ़ोतरी के चलते बेहद संवेदनशील है।

नदियों के तट में बसावट न हो

फरवरी की शुरुआत में उस क्षेत्र में जहां ग्लेशियर टूटा, भारी बर्फबारी हुई थी और कई फुट बर्फ जम गई। लेकिन मौसम साफ होने और धूप निकलने से बर्फ पिघलने लगी, जिससे ग्लेशियर के बड़े हिस्से में हिमस्खलन हुआ और ऋषिगंगा में प्रवाह तेज हो गया। यह प्राकृतिक प्रक्रिया है तथा मौसम में आ रहे बदलावों के कारण घटनाएं बढ़ रही हैं। बांधों का निर्माण ऐसी घटनाओं की स्थिति में जानमाल की क्षति को बढ़ा सकता है।

ग्लेशियर के भीतर झील?

फरवरी में मौसम ठंडा रहता है। ऐसे में सामान्यतया ग्लेशियर नहीं टूटते। लेकिन कई और संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता है। कई बार बर्फ पिघलने से पानी ग्लेशियर के भीतर चला जाता है और भीतर झील बनने लगती हैं। ऐसी झील का पता नहीं चल पाता है। जब ऐसी झील फटती हैं तो इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। दूसरी संभावना यह भी है कि बर्फबारी से पहले भूस्खलन हुआ जिसने नदी में झील बनाई और नदी को अवरुद्ध कर दिया।

राजस्थान में राहुल गांधी की बड़ी सभाएं

किसान-मज़दूर के आगे अंग्रेज नहीं टिके तो मोदी क्या चीज़?

प्रत्यूष ब्यूरो/जयपुर/अजमेर

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 12-13 फरवरी को राजस्थान में बत्तीस घंटे बिताए और इस दौरान उन्होंने हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, नागौर और अजमेर जिलों में महत्ती किसान महापंचायतों को सम्बोधित किया। सूरतगढ़ हवाईपट्टी पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, राज्य के प्रभारी महासचिव अजय माकन, महासचिव के. सी. वेणूगोपाल, प्रवक्ता मोहन प्रकाश, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा व पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट सहित बड़ी संख्या में राज्य मंत्रिमण्डल के सदस्य, विधायक, कांग्रेस नेता और कार्यकर्ताओं ने उनकी अगवानी की।

हनुमानगढ़ जिले के पीलीबंगा में 12 फरवरी को उन्होंने अपने दौरे की पहली किसान महापंचायत को सम्बोधित किया। अपने 22 मिनट के भाषण में राहुल गांधी ने कहा कि देश की 40 प्रतिशत आबादी को कृषि क्षेत्र से रोजगार मिलता है। केन्द्र के तीन नए कृषि कानूनों से ये आबादी बेरोजगार हो जाएगी। मोदी सरकार ने अपने दो-तीन चहेतों को फायदा पहुंचाने के लिए ही ये कानून लागू किए हैं, हम इन्हें रद्द करवा कर ही रहेंगे। श्रीगंगानगर के पदमपुर में किसान सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने यहां तक कह दिया कि इस देश के किसानों के सामने अंग्रेज नहीं टिक पाए तो मोदी क्या चीज हैं? उन्होंने कहा कि कृषि भारत का ऐसा व्यवसाय है, जिसमें 40 लाख करोड़ का टर्नओवर होता है। देश का किसान जागरूक है, इसलिए सबसे पहले उसी ने अंधेरे में टॉर्च जलाई। प्रधानमंत्री को ज़िद छोड़कर लागू कृषि कानूनों को वापस ले लेना चाहिए।

दूसरे दिन उन्होंने नागौर जिले के मकराना एवं अजमेर जिले के रूपनगढ़ में किसान महापंचायतों को सम्बोधित किया, जिसमें दूर-दराज क्षेत्रों से वाहनों और ट्रेक्टरों से किसानों ने शिरकत की। राहुल गांधी ने कहा कि केन्द्र के लागू किए गए कृषि कानूनों के घातक परिणाम से मजदूर, छोटे व्यापारी यहां तक कि खोमचे एवं रेहड़ी वालों के सामने भी रोजगार का गंभीर संकट खड़ा हो जाएगा। जमाखोरी भी बढ़ेगी। कांग्रेस किसानों की बेहतरी के लिए हमेशा उनके साथ खड़ी रही है और खड़ी रहेगी। इससे पहले राहुल गांधी ने अजमेर के सुरसुरा में वीर तेजाजी महाराज के मन्दिर पहुंचकर पूजा की। उसके बाद उन्होंने रूपनगढ़ के नागरीदास स्टेडियम में किसान सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि पहले किसानों के हित के लिए कृषि मण्डियां बनाई गई थी, नए कानून से उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। किसान पूर्व में मिलने वाले लाभ से वंचित हो जाएंगे और बड़े उद्योगपति लाभ कमा लेंगे। उन्होंने कहा कि मोदीजी का यदि देश को कोई योगदान है तो वह भूख, बेरोजगारी और आत्महत्या है।

दो दिवसीय दौरे में राहुल के अलग-अलग अंदाज देखने को मिले। 12 फरवरी को पीलीबंगा में जहां खाट और पदमपुर में मुड्डों पर बैठकर किसानों को सम्बोधित किया। वहीं, 13 फरवरी को किशनगढ़ में सभा के बाद भगवा गमछा पहने राहुल सुरसुरा गांव में लोकदेवता तेजाजी मन्दिर पहुंचे। यहां करीब 10 मिनट रूके। तेल और नारियल चढ़ाकर पूजा की। हाथ में कलावा भी बंधवाया। इसके बाद रूपनगढ़ में ट्रेक्टर चलाया तो मकराना जाने से पहले परबतसर में ऊंटगाड़ी पर सवार हुए।

किसान अन्नदाता : गहलोत

दौरे में राहुल गांधी के साथ सभाओं को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि किसान अन्नदाता है, मोदी को उनकी बात समझनी चाहिए। केन्द्र सरकार झूठे वायदे कर रही है, तथा राज्यों के हिस्से का जीएसटी का पैसा डकार रही है। उन्होंने मोदी सरकार को हर मोर्चे पर विफल बताते हुए हर सभा में क्षेत्रीय मुद्दों को भी फोकस किया।

कानून लादा : डोटासरा

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने कहा कि किसानों ने कोई कानून नहीं मांगा। चेहतों को खुश करने के लिए केन्द्र ने बन्द कमरे में चर्चा कर कानून बना दिए। भाजपा चन्दा देने वाले पूंजीपतियों को खुश करना चाहती है। मोदी ने एलआईसी, बैंक और तेल की कम्पनियां अपने उद्योगपति मित्रों को सौंप दी हैं। राजस्थान ने किसानों की रक्षा के लिए जो कानून बनाए हैं उन्हें राज्यपाल आगे स्वीकृति के लिए नहीं भेज रहे हैं।

आन्दोलन को गति मिली : पायलट

पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने कहा कि राहुल गांधी के आने से किसानों के आन्दोलन को गति मिली है। केन्द्र सरकार ज़िद पर अड़ी है, घमण्ड और अहंकार इतना है कि किसानों की शहादत पर भी कोई सहानुभूति जताने को तैयार नहीं है।

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

HOTEL VENKTESH

A Place of Royal Hospitality

For Booking Contact :
098873 88428, 088758 58584

2/5, Dholi Magri, Shivaji Nagar, Nr. Railway Station, Udaipur (Raj.)
Ph. : 0294-2481083, E-mail : hotelvenkteshudr@gmail.com

भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत

पैंगोंग झील इलाके से पीछे हटी, चीनी सेना। यही मौका है, जब भारत उससे देपसांग भी खाली करने को कहे। कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक सीमाओं पर शांति और शालीनता के लिए भी उसे करे पाबंद।

मनीष उपाध्याय

पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा(एलएसी) पर पैंगोंग झील इलाके से चीनी सेना का पीछे हटना निश्चित रूप से भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत है। लंबे समय से इस बात की प्रतीक्षा थी कि कब चीन इस इलाके से हटे और तनाव कम हो। चीन ने फरवरी के द्वितीय सप्ताह से अपने सैनिकों को पीछे हटाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि पूर्वी लद्दाख में चीनी अतिक्रमण पर भारत ने जिस तरह का कड़ा रुख अख्तियार किया, उसी से चीन झुकने को विवश हुआ है। भारत और चीन के बीच यह टकराव पिछले साल मई में तब शुरू हुआ था। जब चीनी सेना ने इस क्षेत्र में भारत के कब्जे वाले इलाकों में पैर जमा लिए थे। इसके बाद जून में चीनी सैनिकों ने गलवान घाटी में भारतीय सैनिकों पर हमला कर दिया, जिसमें बीस जवान शहीद हो गए थे। इसके बाद दोनों देशों के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया था।

1962 की जंग के बाद गुजरे 59 वर्षों में यह पहला मौका है, जब भारत ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर इतना दमखम दिखाया है। आज पूरी दुनिया भारत का लोहा मानने लगी है। इससे पहले होता यह था कि चीन विस्तारवादी नीति के तहत हमारे इलाकों में अपनी सेना भेजता था, और धीरे-धीरे उन जगहों पर कब्जा जमा लेता था। संसद में खुद रक्षामंत्री ने बताया है कि लद्दाख के अंदर 38,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर चीन का अनधिकृत नियंत्रण है। दोनों देशों के बीच एलएसी की कोई आधिकारिक रेखा नहीं है। चीन का अभी भी हमारे देपसांग इलाके पर कब्जा है, इस मैदानी क्षेत्र पर उसने अपना सैन्य ठिकाना बना लिया है। इससे हमारे दौलत बेग ओल्डी इलाके पर खतरा बना हुआ है। यही मौका है जब हम देपसांग का मुद्दा भी उठाएं और उसे खाली करने को कहें।

पड़ौसी चीन के व्यवहार ने मोटे तौर पर निराश ही किया है। इसी निराशा की वजह से भारत सरकार को कुछ आर्थिक पाबंदियों के सहारे संकेत देने पड़े कि वह संभल जाए। सीमा पर चीन की आक्रामकता का जवाब भारत ने कमोबेश अपनी आर्थिक आक्रामकता से दिया। भारत अगर ऐसा नहीं करता, तो चीन अपनी गलती और भारत की नाराजगी को समझ नहीं पाता।

चीन को भारत की उपयोगिता समझने के साथ यह भी मानना होगा कि भारत की जमीन चुराने के जमाने गए। आज दुनिया में भारत की आर्थिक, कूटनीतिक और राजनीतिक स्थिति बहुत सशक्त है। चीन ने अपने विशाल पड़ोसी रूस के साथ जब अपने सीमा विवादों का समाधान किया, तभी दोनों देशों के बीच संबंध नई ऊंचाइयों पर पहुंचे, ठीक उसी तरह की ऊंचाई भारत-चीन संबंधों को भी हासिल हो सकती है। जिम्मेदारी चीन पर ज्यादा है, क्योंकि उससे भारतीयों का विश्वास हिल गया है। कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक सीमाओं पर शांति और शालीनता बहाल करने की दिशा में उसे पहल कर अपने प्रति भारत और विश्व के अन्य राष्ट्रों में अपनी विश्सनीयता को प्रकट करना होगा।

सच तो यह है कि अगर चीन की मंशा साफ होती तो गतिरोध इतना लंबा नहीं खिंचता। पड़ोसी देशों के साथ विवादों को लेकर इस वक्त चीन की दुनिया भर में आलोचना हो रही है। हाल में अमेरिका ने उसे चेताया भी है कि पड़ोसी देशों के साथ उसके जो विवाद चल रहे हैं, उन पर उसकी नज़र बनी हुई है। अब देखना यह है कि सैनिकों की वापसी के कदम पर वह कितनी ईमानदारी दिखाता है। अभी भी वह कोई छल कर जाए, जैसी कि उसकी प्रवृत्ति है, तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

निःशुल्क स्वास्थ्य बीमा

प्रिय प्रदेशवासियो,

प्रदेश के सर्वांगीण विकास के साथ ही 'पहला सुख निरोगी काया' हमारे लिए सर्वोच्च सरोकारों में से एक है। इसी ध्येय से पहले हमने निःशुल्क दवा योजना तथा निःशुल्क जाँच योजना शुरू की थी, जो आज भी देश में मिसाल बनी हुई हैं। इसी प्रतिबद्धता के तहत हमने दिसम्बर 2019 में निरोगी राजस्थान अभियान लागू किया। गत 10 महीनों से शानदार कोरोना प्रबंधन किया तथा कोरोना टीकाकरण में भी राज्य को मॉडल बनाएंगे। अब हम 30 जनवरी 2021 से आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना के नवीन चरण को लागू कर रहे हैं। यह एक ऐसी अभिनव पहल है जो प्रदेश की लगभग दो तिहाई आबादी की स्वास्थ्य रक्षा के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

राज्य में पूर्व में संचालित भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना (NFSA) के 98 लाख लाभार्थी परिवारों के साथ ही सामाजिक आर्थिक जनगणना (SECC 2011) के पात्र परिवारों को भी शामिल कर योजना का दायरा बढ़ाते हुए आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना के नए चरण में अब 1 करोड़ 10 लाख परिवारों को निःशुल्क उपचार की सुविधा प्रदान की गई है। इस योजना में वार्षिक प्रीमियम 1750 करोड़ रुपये का लगभग 80 प्रतिशत (1400 करोड़ रुपये) अंशदान राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाएगा।

अब प्रति परिवार सालाना निःशुल्क उपचार सीमा को बढ़ाकर 3.30 लाख के स्थान पर 5 लाख रुपए तथा उपचार के लिए उपलब्ध 1401 पैकेज को बढ़ाकर 1576 किया गया है। सामान्य बीमारियों के लिए 50 हजार तथा गंभीर बीमारियों के लिए 4.50 लाख तक का निःशुल्क इलाज उपलब्ध होगा। सरकारी के साथ-साथ सम्बद्ध निजी तथा राज्य में स्थित भारत सरकार के चिकित्सालयों में भी निःशुल्क इलाज मिलेगा। खास बात है कि भर्ती से 5 दिन पहले और डिस्चार्ज के 15 दिन बाद तक का चिकित्सा खर्च भी निःशुल्क पैकेज में शामिल किया गया है। राजस्थान की इस अभिनव योजना के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को बताएं और जीवन रक्षा के इस मिशन में भागीदार बनें।

शुभकामनाओं सहित,

(अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री)

1.10 करोड़ परिवारों को निःशुल्क उपचार

प्रतिवर्ष 1400 करोड़ रुपये राज्य सरकार द्वारा वहन

3.30 लाख के स्थान पर 5 लाख रुपये तक का बीमा कवर उपलब्ध

राजस्थान की एक और अभिनव पहल जो बनेगी मिसाल

आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना

नवीन चरण का शुभारंभ : 30 जनवरी, 2021

इलाज के लिए अपना जन-आधार या आधार कार्ड और फोटो पहचान पत्र साथ लाएं

संपर्क करें : 1800 180 6127 या 181 | www.health.rajasthan.gov.in/abmgrsby

राजस्थान स्टेट हैल्थ एश्योरेंस एजेंसी । चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, राजस्थान

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान द्वारा जनहित में प्रसारित

'राजस्थान' जिसका कण-कण शौर्य, पराक्रम, बलिदान, त्याग, भक्ति व प्रेम की अमिट इबारत है। जब बात स्वाभिमान की हो तो प्रताप मुट्ठी भर सैनिकों के साथ मुगलों की विशाल सेना पर भारी पड़ते हैं। वीरता का ऐसा अनूठा इतिहास लिखते हैं कि हल्दी घाटी की माटी को आज भी लोग चंदन की तरह माथे से लगाते हैं। कर्तव्यों की वेदी पर पन्नाधाय अपने पुत्र का बलिदान कर देती हैं, वहीं हाड़ी रानी राज्य के गौरव के लिए अपना शीश काट कर देती हैं। सतीत्व की रक्षा के लिए जौहर ..... ऐसा अनूठा इतिहास अन्यत्र दुर्लभ है। कोई उत्सव हो तो राजस्थानी नृत्य व लोकगीत उदासियों में भी उत्साह व उमंग भर देते है।

अतीत ही नहीं, राजस्थान का वर्तमान भी गौरवशाली

मदन पटेल

राजस्थान गठन के पश्चात् प्रान्त ने हर क्षेत्र में काफी तरक्की की है। अंग्रेज जिस जर्जर बदहाल स्थिति को छोड़कर गए थे वहां से उठकर आज हम उच्च अर्थव्यवस्था की स्थिति में पहुंच रहे हैं। आज़ादी के बाद के वर्षों में हमारा लोकतंत्र मज़बूत हुआ है। अभिव्यक्ति के अधिकार का प्रसार हुआ है। मानवाधिकारों के हनन पर रोक लगी है। जनता को शिक्षा और सूचना का अधिकार मिला है। आर्थिक असमानता है परन्तु खाई कम हुई है। मध्यवर्गीय लोगों की संख्या बढ़ी हैं। सरकारी योजनाओं के जरिये गांवों में समृद्धि बढ़ी हैं। गांवों के जिन लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान नसीब नहीं था, उनको यह उपलब्ध होने लगा है। पंचायतराज व सहकारिता आन्दोलन मज़बूत हुआ है। लोगों की आय में वृद्धि हुई है। स्वच्छता संबंधी सेवाओं में सुधार हुआ है। कामकाजी युवाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। इंटरनेट, फेसबुक, ट्वीटर जैसी सूचना टेक्नोलॉजी बढ़ी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के अवसर व युवाओं की अपेक्षाएं बढ़ी हैं। आबादी के नियंत्रण के प्रति युवा वर्ग जागरूक है। दलितों व जनजाति के लिए जारी अनेक कल्याणकारी योजनाओं से उन्हें विविध क्षेत्रों में अवसर मिल रहे हैं। 30 मार्च, 1949 को जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों का विलय होकर वृहत्तर राजस्थान संघ बना था। इसी तिथि को राजस्थान की स्थापना का दिन माना जाता है। यह प्रदेश अपनी आन, बान, शान, शौर्य, साहस, कुर्बानी, त्याग, बलिदान तथा वीरता के लिए सम्पूर्ण विश्व में ख्यात है। राजस्थान के लोग अपनी कड़ी मेहनत के लिए जाने जाते हैं। भौगोलिक विषमताओं और प्राकृतिक चुनौतियों के बावजूद यहां के नागरिकों की दृढ़ इच्छाशक्ति और आपसी सहयोग से प्रदेश का चहुंमुखी विकास हो सका है। राजस्थान में गरीब लोगों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार, संसाधनों में वृद्धि और राजनीति, व्यवसाय आदि सभी क्षेत्रों में विकास, हमारी खुशहाली के प्रतीक हैं। 30 मार्च, 1949 को राजपूताने के गठन की प्रक्रिया के साथ ही एक नवम्बर 1956 को राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई। 30 मार्च प्रदेशवासियों के लिए अतीत को याद करने और वर्तमान पर गर्व करने का दिन है। पिछले 71 वर्ष में राजस्थान की प्रगति और विकास पर सन्तोष किया जा सकता है।

राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल 3.42 लाख किलोमीटर है। यह देश

राजस्थान विधानसभा गठन के बाद प्रथम स्पीकर रहे नरोत्तम जोशी(कांग्रेस) 1952-57

विधानसभा के प्रथम गैर कांग्रेसी स्पीकर रहे हरिशंकर भाभड़ा(भाजपा) मार्च 1990 से अक्टूबर 1994

डॉ. सी. पी. जोशी (कांग्रेस) राजस्थान विस में वर्तमान स्पीकर हैं। इनका निर्वाचन 16 जनवरी 2019 को हुआ।

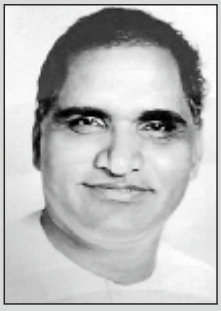

पं. हीरालाल शास्त्री(कांग्रेस) राजस्थान गठन के बाद प्रथम मुख्यमंत्री बने 7 अप्रेल 1949 से 5 जनवरी 1951

वर्तमान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत (कांग्रेस) 17 दिसम्बर 2018 से, इससे पूर्व भी ये दो बार मुख्यमंत्री रहे।

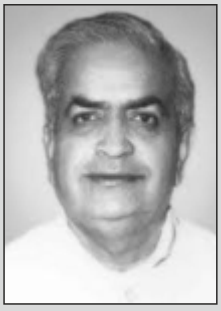

मोहनलाल सुखाड़िया (कांग्रेस) 38 वर्ष की आयु में मुख्यमंत्री बने। उनका सबसे लम्बा कार्यकाल 1954-71 तक मुख्यमंत्री रहे।

भैरोसिंह शेखावत (भाजपा) को प्रथम गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री बनने का गौरव (1977-1980) हासिल हुआ। इसके बाद भी वे दो बार मुख्यमंत्री रहे।

वसुंधरा राजे (भाजपा) को राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री होने का श्रेय। 3 दिसम्बर 2003 से 2008 व उसके बाद दिसम्बर 2013 से 2018 तक मुख्यमंत्री रहीं।

राजस्थान में प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहाल सिंह रहे। (नवम्बर 1956 से अप्रेल 1962)

वर्तमान राज्यपाल कलराज मिश्र की नियुक्ति सितम्बर 2019 को हुई।

गुलाबचंद कटारिया राज्य विधानसभा में 13 जनवरी 2019 से विपक्ष के नेता हैं। आठ बार के विधायक कटारिया पूर्व भाजपा सरकारों में मंत्री भी रहे हैं।

के कुल क्षेत्रफल का 10.41 है। राजस्थान की जनसंख्या 6.86 करोड़ है और साक्षरता की दर 66.1 प्रतिशत है। राजस्थान रेतीला, बंजर, पर्वतीय और उपजाऊ कच्छारी मिट्टी से मिलकर बना है। वर्तमान में राजस्थान में सात संभाग, 33 जिले, 295 पंचायत समितियां, 9 हजार 891 ग्राम पंचायतें, 43 हजार 264 आबाद गांव, 184 शहरी निकाय और नगरीय क्षेत्र हैं। यहां विधानसभा के 200 और लोकसभा के 25 क्षेत्र हैं। राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि एवं ग्रामीण आधारित है। कृषि और पशु पालन यहां के निवासियों के मुख्य रोजगार है। आज़ादी के बाद इस प्रदेश ने निश्चय ही प्रगति और विकास की ऊंचाईयों को छुआ है। वर्षा की अनियमितता के कारण यह प्रदेश अनेकों बार सूखे और अकाल का शिकार हुआ। मगर प्रदेशवासियों ने विपरीत स्थितियों में भी जीना सीखा और अपने बुलन्द हौसले को बनाये रखा।

राजस्थान ने हर क्षेत्र में प्रगति की है। स्कूलों की संख्या बढ़ी है। छात्रों का नामांकन भी दोगुणा-चौगुणा हुआ है। राशन सर्वसुलभ हुआ है। विद्युत के क्षेत्र में भी प्रदेश आगे बढ़ा है। गांव-गांव और घर-घर बिजली से रोशन हुए हैं। तेल-गैस की उपलब्धि से राजस्थान का रेगिस्तान इन्दिरा गांधी नहर के बाद अब और अधिक सरसब्ज होने लगा है। विद्युत क्षमता में भी बढ़ोतरी हुई है। सड़कों का जाल चहुंओर फैला है। गांवों को मुख्य सड़कों से जोड़ा गया है। पेयजल के क्षेत्र में अच्छी खासी प्रगति हुई है। गांव-गांव, ढाणी-ढाणी और हर शहर में पेयजल पहुंचाया गया है।

जो गांव पेयजल के लिए सिर्फ वर्षा पर आधारित थे वहाँ जल विभाग की योजनाओं के जरिये पानी पहुंचाया जा रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़ी कामयाबी हासिल की गई। पर्यटन के क्षेत्र में भी राज्य काफी समृद्धशाली है। यहाँ के किले, हवेलियाँ, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर मेले, महल, झीलें, पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करती हैं। राजस्थान का पर्यटन के क्षेत्र में विश्व में प्रमुख स्थान है। पर्यटन राज्य के रूप में प्रदेश ने विश्व मानचित्र में अपनी खास पहचान बनाई है।

प. बंगाल चुनाव

दांव पर दलों की प्रतिष्ठा

भगवान प्रसाद गौड़

आगामी अप्रेल-मई में होने वाले पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव में बढ़त बनाने की कोशिश में जुटे राजनीतिक दलों और गठबंधन के बीच टकराव बढ़ता जा रहा है। लोकसभा चुनाव की सफलता के बाद भाजपा सरकार बनाने के मंसूबे बांध रही है, वहीं सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस अपने ज़मीनी आधार को बरकरार रखने में जुटी है। लगभग तीन दशक तक सत्ता में रहने वाली माकपा भी इस चुनाव में कांग्रेस के साथ अपनी खोई ताकत वापस हासिल करने की कोशिश में है।

पश्चिम बंगाल का आगामी विधानसभा चुनाव त्रिकोणीय संघर्ष में उलझता जा रहा है। राज्य में विभिन्न दलों में तोड़फोड़ कर अपनी ताकत बढ़ा रही भाजपा को सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस से तो जूझना ही पड़ रहा है, कई क्षेत्रों में उसे माकपा और कांग्रेस के गठबंधन की चुनौती का भी सामना करना पड़ सकता है। तृणमूल अभी भी राज्य की सबसे ताकतवर पार्टी है और उसे ममता बनर्जी के जुझारूपन पर भरोसा है। दूसरी तरफ भाजपा, तृणमूल कांग्रेस में लगातार सेंध लगाकर माहौल को बदलाव के पक्ष में खड़ा करने में जुटी हुई है। भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के साथ कांग्रेस और माकपा का गठबंधन इस बार सत्ता समीकरणों में अहम है क्योंकि तृणमूल कांग्रेस के कमजोर होने पर लाभ केवल भाजपा को ही नहीं मिलेगा, बल्कि कई सीटें कांग्रेस और माकपा गठबंधन को भी जा सकती हैं। यही वजह है कि भाजपा अब उन क्षेत्रों में भी अपनी जड़ें जमाने की कोशिश कर रही है, जहां माकपा और कांग्रेस मजबूत हैं।

पार्टी के एक प्रमुख नेता ने कहा है कि चुनाव में विरोधियों को कभी भी कमजोर नहीं मानना चाहिए। दरअसल, भाजपा में आए अधिकांश नेता दूसरी विचारधारा और संस्कृति से आए हैं, इसलिए पार्टी को उनको अपने साथ जोड़े रखने में भी समस्याएं आ सकती हैं।

तृणमूल कांग्रेस और उसकी सुप्रीमो ममता बनर्जी का साथ कई बड़े नेता छोड़ गए हैं, जिनमें से कुछ ने भाजपा का दामन थामा है, तो कुछ कांग्रेस की ओर देख रहे हैं। प. बंगाल चुनाव का बाजीगर कौन होगा, यह कहना अभी जल्दबाजी होगा लेकिन, यह तो तय है कि इस चुनाव समर में बड़े दलों और बड़े नेताओं की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है।

शुद्ध शाकाहारी भोजन

रोशनलाल पालीवाल

हमारे यहां सभी तरह के शाकाहारी भोजन
व्यवस्था के ऑर्डर लिए जाते हैं।

पालीवाल शिव भोजनालय

3, चेतक मार्ग, उदयपुर - 313001 (राज.)

Phone : 0294-2429014, Mobile : 94603-24836

चिलगोजा, दिमाग की खुराक

चिलगोजा यानी पाइन नट्स विटामिन-ए, विटामिन-ई, विटामिन-बी1, विटामिन-बी2, कॉपर, मैग्नीशियम आदि से भरपूर है। बच्चे को रोज दूध के साथ दो-तीन चिलगोजे खिलाने से उसका दिमाग तेज होता है और लंबाई बढ़ती है। रोज सुबह नींबू-पानी के साथ पांच चिलगोजे खाने से तनाव कम होता है और वजन नियंत्रित रहता है।

ऐसे खाएं मेवे

- बादाम को भूनकर और उसमें नमक डालकर या मुनक्का के साथ पीसकर, बादाम हलवा बनाकर या किसी भी फल के जूस में पीसकर या बुरककर खाया जा सकता हैं।
- काजू को पानी में भिगोकर फिर तीस मिनट बाद उसी पानी में पीसकर नमक मिलाएं और चटनी की तरह खाएं। तवे पर सूखा भूनकर भी काजू को खा सकते हैं।
- अखरोट को गुनगुने दूध अथवा शहद और दालचीनी के साथ पीसकर भी खा सकते हैं।
- गरम दूध में सूखे अंजीर उबालकर या मिश्री के साथ रात के समय लें।
- किशमिश को रात में पानी में भिगो कर सेवन किया जाए, तो यह शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है।
- पिस्ते को किसी भी डेजर्ट, सलाद में टॉपिंग के रूप में या सॉस बनाकर खाया जा सकता है।
- चिलगोजा को केक या सूप में डालकर या फिर कच्चा भी खाया जा सकता है।

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

Vipin Sharma
Director

Shreenath®
Travellers

Head Office : 9, Kan Nagar, Main Road, Near Sub City Center
Udaipur Ph. : 0294 - 2488333, 2489555

Daily Parcel
Service Available

Udaipur : 3, Yatri Hotel Udaipole, Udaipur 313 001
Ph. : 0294 - 2423181, 2423182

Fatehpura, Udaipur (Rameshwar)
Shreenath Travellers, Fatehpura
Ph. : 09571210045

पोषण का पावर बैंक

छोटे-छोटे आकार के तरह-तरह के मेवे अपने आप में पोषक तत्वों का खजाना हैं। सेहत के लिहाज से ये बहुत फायदेमंद हैं। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए इन्हें रोजमर्रा की अपनी डाइट का हिस्सा अवश्य बनाएं।

रेणु शर्मा

सूखे मेवे उस पावर बैंक की तरह हैं, जो हमें ऊर्जावान बनाने के साथ फाइबर, प्रोटीन, मिनरल्स और असंतृप्त वसा जैसे पोषक तत्व भी देते हैं। नियमित रूप से मेवों के सेवन से कैंसर की आशंका भी कम होती है और साथ ही त्वचा, बाल और नाखून आदि की सेहत भी दुरुस्त रहती है। 'एक स्वस्थ मानव के लिए लगभग 1 औंस (28 ग्राम) मिले-जुले मेवे या कोई एक ही मेवा खाना पर्याप्त है। ये ऊर्जा और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, इसलिए किसी-न-किसी रूप में इन्हें अपनी डाइट का हिस्सा जरूर बनाएं। मेवे में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन होता है। अगर किडनी, उच्च रक्तचाप, हाई कोलेस्ट्रॉल या पाचन से संबंधी कोई समस्या हो तो डॉक्टरी सलाह से ही इनका सेवन किया जाना चाहिए।'

बादाम में बड़ा दम

बादाम कैल्शियम, विटामिन-ई, मैग्नीशियम, खनिज फाइबर और उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का अच्छा स्रोत है। यह कोलेस्ट्रॉल और कैंसर के खतरे को कम करता है व दिल की बीमारियों से भी रक्षा करता है। वजन नियंत्रित रखने में भी मददगार है। एक दिन में पांच से ग्यारह भीगे हुए बादाम सुबह-सुबह खाना, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हैं।

बड़े काम का काजू

काजू आयरन, मैग्नीशियम, जिंक, कॉपर, फॉस्फोरस आदि पोषक तत्वों का अच्छा स्रोत है। इस के सेवन से ट्राइग्लिसराइड कम होता है और ब्लड शुगर नियंत्रित रहता है। इसमें पाए जाने वाले मैग्नीशियम से रक्तचाप नियंत्रित रहता है। काजू में पाया जाने वाला कॉपर रक्त वाहिकाओं, हड्डियों और जोड़ों को लचीलापन प्रदान करता है। जिंक शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता में इज़ाफा करता है। हर दिन कम-से-कम पांच काजू जरूर खाएं। शाम के समय काजू का सेवन लाभदायक है।

अखरोट दूर करे अवसाद

अखरोट मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है। विभिन्न शोधों के मुताबिक नियमित रूप से अखरोट के सेवन से वजन नियन्त्रित रहता है। इसके एंटीऑक्सिडेंट्स होने के कारण यह दिल को सेहतमंद रखता है और कैंसर के खतरे को भी कम करता है। अवसाद को कम करने में अखरोट उपयोगी है।

एनर्जी के लिए अंजीर

अंजीर आयरन, विटामिन, पोटेशियम, सोडियम आदि का अच्छा स्रोत है। इसके नियमित सेवन से जुकाम, सिरदर्द, कमर दर्द, कब्ज और एनीमिया जैसी बीमारियों में राहत मिलती है। अंजीर में कैल्शियम काफी अधिक मात्रा में पाया जाता है, जो हड्डियों के लिए काफी अच्छा होता है।

लाजवाब पिस्ता

पिस्ता सिर्फ मिठाइयों की ही नहीं, शरीर की शोभा बढ़ाने में भी सहायक है। उच्च पोषक तत्वों और प्रोटीन से भरपूर पिस्ता वजन कम करने में सहायक होने के साथ कोलेस्ट्रॉल और रक्तचाप का नियंत्रक है। इसमें पाया जाने वाला विटामिन-ई त्वचा को खूबसूरत बनाता है। दिन में पांच से सात पिस्ता खाना सेहत के लिए अच्छा है।

कमाल की किशमिश

आयरन का श्रेष्ठ स्रोत होने की वजह से किशमिश के नियमित सेवन से खून की कमी और हड्डियों की कमजोरी दूर होती है। इसमें फाइबर, विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में होते हैं। किशमिश पाचन में मददगार है। 5 से 7 किशमिश रोज खाना फायदेमंद है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेष

'हमें न किसी पर जय चाहिए न किसी से पराजय'

भारत के स्त्री समाज के हिस्से सिर्फ तरक्की का कर्मकांड और विकास का अंतर-विरोध आया है। किसी एक दिन का अखबार उठाकर देखने की जरूरत है, इस कदर घरेलू हिंसा, हत्या और स्त्री के विरुद्ध शारीरिक प्रताड़ना से भरी खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि अच्छा-भला नागरिक अवसाद या उन्माद का रोगी हो जाए। कहीं बर्बर तरीके से स्त्री का सफाया, तो कहीं मनोवैज्ञानिक पद्धति से यातना।

ममता कालिया

आठ मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस है। इसका यह अर्थ नहीं है कि शेष 364 दिन पुरुष-दिवस है। यह तो स्त्रियों के अनथक संघर्ष और अविराम आंदोलन की याद दिलाने वाला प्रतीक-दिवस है। सोचकर रोमांच होता है कि अमेरिका में 28 फरवरी, सन् 1909 में ही पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया, जब कपड़ा बनाने वाली बुनकर स्त्रियों ने अपनी मजदूरी और मजबूरी के विरूद्ध हड़ताल की। उनके कार्यस्थल की बदतर परिस्थितियां अमानुषिक थीं। तब से अब तक स्त्रियों में बहुत जागरूकता विकसित हुई। जाति, धर्म, देश, वर्ग, भाषा, लिपि और संस्कृति के परे अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एकता का संदेश देने वाला सबसे विशाल मंच है।

कौन नहीं जानता कि जब-जब कहीं भी युद्ध हुआ, उसमें स्त्री और बच्चों पर सबसे अधिक जुल्म ढहाए गए। शरीर पर पड़ी चोटें वक्त के साथ ठीक हुईं, पर उनकी भयावह स्मृति घाव के निशान की तरह बनी रही। इन युद्धों के जो मनोवैज्ञानिक आघात पड़े, उन्होंने मर्माहत महिलाओं की संख्या में अपार वृद्धि कर दी। दो महायुद्ध और अनेक छोटे-बड़े विभाजक युद्ध औरतों और बच्चों की बलि लेते रहे।

संयुक्त राष्ट्र ने अंततः 8 मार्च, 1975 में यह निर्णय लिया कि अब से यह तारीख पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाई जाएगी। 1975 अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष भी घोषित हुआ था। सन 1995 में बीजिंग घोषणा-पत्र के अनुसार, स्त्री को शिक्षा और रोजगार चुनने का अधिकार सौंपा गया।

स्त्री-पुरुष के बीच कोई भेदभाव लैंगिक आधार पर न हो, यह संयुक्त राष्ट्र ने बहुत पहले, सन् 1945 में ही, लिखित घोषणा-पत्र में कहा था, किन्तु वस्तुस्थिति आज भी विकट और विकराल है। समूचे संसार में स्त्री-समाज तरह-तरह के संक्रमण से गुजर रहा है। स्त्री को समाज की एक सार्थक, समान, स्वतंत्र इकाई समझने में सभी देशों को दिक्कत है।

सवाल का रुख भारतीय समाज की तरफ मोड़ें, तो हम पाएंगे कि हमारे हिस्से तरक्की का कर्मकांड और विकास का अंतर-विरोध आया है। किसी एक दिन का अखबार उठाकर देखने की जरूरत है, इस कदर घरेलू हिंसा, हत्या और स्त्री के विरुद्ध शारीरिक प्रताड़ना से भरी खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि अच्छा-भला नागरिक अवसाद या उन्माद का रोगी हो जाए। कहीं बर्बर तरीके से स्त्री का सफाया, तो कहीं मनोवैज्ञानिक पद्धति से यातना। महिला अगर नौकरी में है, तो वहां उसके सम्मान पर संकट और अगर घर में है, तो घरेलू हिंसा मानो उसका प्रतिदिन का रूटीन है। यहां पर याद आती हैं महादेवी वर्मा, जिन्होंने सन 1931 में अपने एक आलेख में लिखा था, 'हमें न किसी पर जय चाहिए न किसी से पराजय, न किसी पर प्रभुता चाहिए, न किसी का प्रभुत्व। केवल अपना वह स्थान चाहिए, वह स्वत्व चाहिए, जिसका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं, परंतु जिसके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेंगी।'

महादेवी वर्मा के इसी भाव को कृष्णा सोबती ने अपनी कहानी ऐ लड़की में इन शब्दों में दिया है, 'दुःख और अरमान को परे रखना। मैं निश्चिंत हूं तुम्हारे लिए, क्योंकि न तुम सताई जा सकती हो और न तुम किसी को सताती हो।'

पाश्चात्य आंदोलनकारियों की अपेक्षा भारतीय चिंतकों और समाज सुधारकों ने स्त्री की स्थिति और उपस्थिति पर गंभीर विचार-विमर्श किया। कुछ जड़तावादियों ने धर्म की अग्निशलाका से स्त्री का प्रारब्ध लिखने की चतुराई दिखाई, किन्तु ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महादेव गोविन्द रानाडे, महर्षि कर्वे, सावित्री बाई फूले, पंडिता रमाबाई और महात्मा गांधी ने स्त्री की शिक्षा और स्वावलम्बन पर जोर देकर समाज में संतुलन बनाने का पुरजोर समर्थन किया।

आज स्त्री-लेखन में जो तेजी, त्वरा और तेवर दिखाई देता है, वह इसी चेतना का मुखर रूप है। स्त्री विमर्श का जन्म इसी तेवर के तहत हुआ है और स्त्री आज अपने अस्तित्व, अस्मिता और व्यक्तित्व के प्रति पूरी तरह जागरूक है। बीसवीं सदी से लगाकर आज तक स्त्री-लेखन स्वाधीनता और समानता का घोषणा-पत्र रहा है। दूसरे शब्दों में, स्त्री-लेखन के साथ ही स्त्री विमर्श का समय आरंभ होता है। इस लंबे सफर में स्त्री विमर्श पर कई रंग चढ़े और उतरे। कभी लगा, पश्चिम की नकल में स्त्री विमर्श स्वच्छंतावाद की तरफ जा रहा है, तो कभी लगा, यह आनंद के मार्ग पर जा रहा है। कभी ऐसा भी प्रतीत हुआ कि स्त्री विमर्श प्रतिघाती जत्थे की तरह पुरुष-विरोधी हो उठा है। इन संक्षिप्त अंतरालों का प्रयोजन केवल उत्तेजना पैदा करना रहा होगा, क्योंकि ये शीघ्र विलुप्त हो गए। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर स्त्री विमर्श में नई प्राण-वायु फूंकने की आवश्यकता है। यह भी रेखांकित करना जरूरी है कि स्त्री विमर्श पुरुषों के प्रतिपक्ष में खड़ा आन्दोलन नहीं है, वरन पुरुष-मानसिकता में सुधार की मांग करने वाला विमर्श है। यहां प्रतिघात नहीं, प्रतिरोध है। दुस्साहस नहीं, साहस है। और चिंता नहीं, चेतना है।

(लेखिका प्रसिद्ध साहित्यकार हैं)

महिला शख्सियतें : जिन पर मेवाड़ को गर्व

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।' की धारणा भारत के आम आदमी के मन में सदैव रही है। वैदिक काल से ही नारी को समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता रहा हैं। भारतीय जीवन दर्शन में नारी को शक्ति का पर्याय माना गया है। नारी के बिना कोई भी मांगलिक कार्य सम्पूर्ण नहीं माना जाता है। वर्षों से पुरुष प्रधान समाज नारी का एक अबला स्वरूप प्रकट करता रहा है लेकिन नारी ने एक लम्बा संघर्ष तय कर अपना सबला स्वरूप प्रकट किया है। पिछले कुछ वर्षों में नारियों ने जमीन से आकाश तक अपनी सफलता की इबारत लिखी है। बावजूद इसके समाज कन्या भ्रूण हत्या का कलंक ढो रहा है। संकुचित मानसिकता से ऊपर उठ कर नारी को पूर्ण सम्मान और उसकी सफलता में पुरुष वर्ग को सहयोगी बनना होगा। उसके बिना एक सफल परिवार की कहानी अधूरी है। हमें खुशी है कि आज 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का संदेश हर घर में गूंजने लगा है। फलक छूते अरमानों से संकल्पित, आत्मविश्वास से लबरेज, बुलन्दियां छूती मेवाड़ की ऐसी कई महिला शख्सियतें हैं जिन पर हमें नाज़ है। उनमें से कुछ का यहां संक्षेप में परिचय प्रस्तुत है।

- प्रबंध सम्पादक

डॉ. गिरिजा व्यास

मेवाड़ की जानी-मानी विदुषी, अनुभवी तथा वरिष्ठ कांग्रेस राजनेता डॉ. गिरिजा व्यास मेवाड़(उदयपुर-चित्तौड़गढ़) से सांसद एवं उदयपुर से राजस्थान विधानसभा में प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। राज्य एवं केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में रहते हुए इन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में इन्होंने संगठन को मजबूती एवं नई दिशा दी। महाराणा भूपाल महाविद्यालय उदयपुर में दर्शनशास्त्र की प्रोफेसर रही डॉ. गिरिजा व्यास ने राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में महिलाओं के हितों एवं अधिकारों के संरक्षण का उल्लेखनीय कार्य किया।

कल्पना गोयल

स्वयंसेवी संस्था तारा संस्थान(नेत्र चिकित्सालय) की संस्थापक-अध्यक्ष कल्पना गोयल का मानना है कि महिलाओं पर समाज की बड़ी जिम्मेदारी है। वे एक परिवार को सुखी बनाती हैं तो एक समाज की भी रचना करती हैं। कल्पना गोयल का तारा संस्थान नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा और वृद्धाश्रमों के संचालन की दिशा में प्रसिद्ध है। अन्य शहरों में संस्थान नेत्र चिकित्सालय संचालित करता है।

डॉ. लक्ष्मी झाला

देश के प्रमुख उदयपुर स्थित नेत्र चिकित्सालय, अलख नयन मन्दिर आई इंस्टीट्यूट की पिछले 20 वर्षों से मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. लक्ष्मी झाला एक सहृदयी चिकित्सक के साथ समाजसेविका के रूप में भी पहचान रखती हैं। पीड़ित मानवता के लिए नि:स्वार्थ सेवा के गुण और संस्कार उन्हें अपने माता-पिता से मिले। डॉ. लक्ष्मी अपना आध्यात्मिक गुरु महात्मा भूरी बाई (नाथद्वारा) को मानती है। दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट डॉ. लक्ष्मी ने अपना पूरा जीवन अलख नयन मन्दिर के मिशन 'मानवता के लिए जरूरतमन्दों की सेवा' को समर्पित किया है। वे समाजसेवी विभिन्न संगठनों से भी जुड़ी हुई हैं।

अलका शर्मा

बचपन से ही सपना था कि वे एक ऐसे विद्यामन्दिर की स्थापना करें जहां विद्यार्थी पढ़ाई के साथ अन्य क्षेत्रों में भी सर्वश्रेष्ठ हों। यह सपना इन्होंने सेन्ट्रल पब्लिक सी. सै. स्कूल की स्थापना कर साकार भी किया। उनका स्कूल बालक के समग्र विकास पर केन्द्रित है। यह स्कूल रोबोट बनाने में विश्वास नहीं करता जो पाठ्यक्रम में निहित सामग्री की मात्र रॉट मेमोरी प्रदर्शन करता है। इस विद्यालय में न केवल ये पूरे समर्पण और नवाचारों के साथ शिक्षण करवाती हैं, अपने अन्य साथियों का मार्गदर्शन भी करती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए इन्हें राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है।

ग्लोरी एम. फिलीप

शिक्षा के क्षेत्र में उदयपुर के जाने-माने विद्यालय सेन्ट मैथ्यू सी. सै. स्कूल की निदेशक-प्राचार्य ग्लोरी एम. फिलीप शिक्षा की अधुनातन अवधारणाओं के साथ बच्चों के समग्र विकास के प्रति संकल्पित हैं। यह विद्यालय उनके निर्देशन में पिछले कुछ वर्षों में ही असाधारण रूप से विकसित हुआ है। इसके पीछे बच्चों के अभिभावकों से उनका निकट का सम्पर्क है और यही वजह है कि बच्चे पारम्परिक एवं पारिवारिक नैतिक मूल्यों के साथ व्यवहार और अनुशासन के साथ अकादमिक उपलब्धियों के शिखर पर बढ़ते ही जा रहे हैं।

वन्दना अग्रवाल

नारायण सेवा संस्थान की निदेशक वन्दना अग्रवाल का संस्थान के नि:शुल्क प्रकल्पों के सम्पादन में महत्वपूर्ण योगदान है। पिछले वर्ष उदयपुर जिले की कुपोषित आदिवासी महिलाओं को सुपोषित करने के लिए उदयपुर की तत्कालीन जिला कलेक्टर श्रीमती आनन्दी के आग्रह पर एक विशेष अभियान चलाया था। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं एवं स्कूली बच्चों की सहायता, सेवा एवं चिकित्सा आदि में सदैव तत्पर रही हैं। इन्हें राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर विभिन्न पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। कोरोना काल में इन्होंने बेरोजगार एवं निर्धन परिवारों तक नि:शुल्क राशन पहुंचाने का कार्य किया।

डॉ. कल्पना शर्मा

उदयपुर जिले की पहली महिला परिवहन अधिकारी डॉ. कल्पना शर्मा एक संवेदनशील अधिकारी होने के साथ-साथ एक अच्छे समाज की रचना के प्रति भी चिंतनशील हैं। उनका कहना है कि आज देश जिस तेजी से विकास की ओर बढ़ रहा है, उसमें पुरुषों के साथ-साथ नारियों का भी उतना ही योगदान है। महिलाएं हर परिस्थिति में कार्य निष्पादन का जज्बा रखती हैं, भले ही वह घर हो अथवा कार्य क्षेत्र। सभी को साथ लेकर चलना और विपरीत हालातों को अनुकूल बना लेना तो महिलाओं की अपनी अलग ही कला है।

वन्दना वजीरानी

चित्तौड़गढ़ के अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड की प्रबन्ध निदेशक श्रीमती वन्दना वजीरानी ने न केवल एक अधिकारी के रूप में बल्कि समाज सेविका के रूप में भी अपनी पहचान बनाई है। बैंक के विकास में उनका बैंक की चेयरपर्सन श्रीमती विमला सेठिया के साथ बेहतर तालमेल रहा है। बैंक अन्य सामाजिक कार्यक्रमों में भी अग्रणी रहा है। जिसमें श्रीमती वजीरानी की अपनी चेयरपर्सन के साथ सदैव सकारात्मक भूमिका रही है।

किडनी स्वस्थ तो शरीर स्वस्थ

किडनी (गुर्दा) मानव शरीर का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इसका काम शरीर में खून साफ करना और उसमें विषैले तत्वों को मूत्र द्वारा विसर्जित करना है। इसके अतिरिक्त खून में मौजूद पानी को भी किडनी अलग करती है। पानी अधिक मात्रा में पीकर हम किडनी को खराब होने से बचा सकते हैं। इसे पानी, उचित पौष्टिक आहार और व्यायाम से स्वस्थ व सुचारू रख सकते हैं। शारीरिक गतिविधियों को सक्रिय व सुचारू रखने के लिए किडनी का स्वस्थ रहना जरूरी है। नियमित व्यायाम ब्लड प्रेशर और मधुमेह से भी मनुष्य को बचाता है। 11 मार्च को विश्व गुर्दा दिवस पर प्रस्तुत है वैद्य शोभालाल औदिच्य का विशेष आलेख।

शरीर के खास अंगों में एक है, किडनी। कैंसर और हृदय रोग के बाद किडनी (गुर्दा) में खराबी को तीसरी बड़ी जानलेवा बीमारी माना जाता है। देश में किडनी सम्बंधी बीमारियों के मरीज काफी तादाद में बढ़ते जा रहे हैं। 'द नेशनल किडनी फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया' के अनुसार भारत में सालाना करीब 80-90 हजार से अधिक किडनी ट्रांसप्लांट की ज़रूरत पड़ती है। ऐसे में शरीर को स्वस्थ रखने के लिए किडनी का भी फिट(स्वस्थ) रहना अत्यंत आवश्यक है।

किडनी स्वस्थ रखने के उपाय

नमक की मात्रा नियंत्रित करें: कम नमक का सेवन दिल, रक्तचाप और किडनी के लिए उचित होता है। अगर हम नमक अधिक लेंगे तो पानी का एकत्रीकरण शरीर में बढ़ जाता है। कम लेने से पानी एकत्रीकरण की समस्या नहीं होती। कम नमक का सेवन किडनी में पथरी बनाने से रोकता है और टांगों की सूजन को भी रोकता है, इसलिए नमक का सेवन नियंत्रित मात्रा में करें।

वजन पर नियंत्रण रखें : मोटापा कई बीमारियों की जड़ है। वजन अधिक होने से रक्तचाप प्रभावित होता है, जिससे किडनी सुचारू काम नहीं कर सकती। किडनी को स्वस्थ रखने के लिए वजन पर नियंत्रण रखना ज़रूरी है ताकि किडनी की बीमारी के खतरे से बचा जा सके।

धूम्रपान न करें: सभी जानते हैं कि धूम्रपान स्वास्थ्य हेतु खतरनाक है, चाहे दिल की बीमारी हो या किडनी की। अगर स्वयं को स्वस्थ रखना चाहते हैं तो धूम्रपान बंद कर दें ताकि दिल और किडनी सुचारू रूप से क्रिया करती रहे।

धूप सेवन अवश्य करें: विटामिन डी की प्रचुर मात्रा हमें धूप से ही मिल सकती है, क्योंकि सूर्य की किरणें विटामिन डी उत्सर्जित करती हैं। नियमित 10 मिनट की धूप किडनी को स्वस्थ रखने हेतु लाभप्रद होती है। इसके सेवन से कैल्शियम और फॉस्फोरस शरीर में ठीक से अपना कार्य करता है जो किडनी को स्वस्थ रखने में मदद भी करता है।

तनाव को दूर रखें: तनाव तो शरीर के लिए चिता का काम करता है, इसलिए तनाव को दूर रखें और स्वस्थ रहें। तनावग्रस्त रहने से किडनी पर भी दबाव बढ़ता है। अत: किडनी स्वस्थ रखनी है तो फालतू के तनावों से छुटकारा पाएं।

फलों और सब्जियों का सेवन: डॉक्टर्स के अनुसार उन फल-सब्जियों का सेवन अधिक करें जिनमें पानी की मात्रा काफी हो और जिनसे शरीर को पानी मिलता रहे। इनके नियमित सेवन से किडनी को स्वस्थ रखें। प्राकृतिक चिकित्सा में शरीर को डिटॉक्सिफाई कराया जाता है ताकि शरीर के विषैले तत्व बाहर निकल सकें और किडनी की सफाई हो सके।

अस्वस्थ किडनी के लक्षण

- चेहरे एवं पैरों में सूजन, भूख कम लगना, कमजोरी महसूस करना, उलटी की फीलिंग होना।
- थकावट जल्दी होना, शरीर में खून की कमी का होना, हाई ब्लडप्रेशर रहना।

अगर किडनी में स्टोन हो तो

अगर किडनी में स्टोन हो तो दिन में दो बार अजवायन का पानी लें। 8 से10 दाने अजवायन के लें। उन्हें धोकर 2 से 3 कप पानी में उबालें। इतना उबालें कि पानी का रंग, हरा, ब्राउन हो जाए। ठंडा कर उस पानी को दिन में सुबह-शाम पिएं। लाभ मिलेगा।

आहार में जरूर शामिल करें

धनिया किडनी स्टोन हेतु भी लाभप्रद है। इसका सेवन अपने नियमित आहार में करें। किडनी संबंधित दवाओं में भी धनिये का प्रयोग होता है।

72वां गणतंत्र दिवस

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

Rajas@75

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

#राजस्थान_सतर्क_है

विविधता में एकता की शान

हमारा गणतंत्र हमारा अभिमान

विविध धर्मों, आस्थाओं और संस्कृतियों को एक साथ लेकर चलने वाले हमारे गणतंत्र पर हमें गर्व है।

आइये, इस राष्ट्रीय पावन पर्व पर प्रदेश के हर वर्ग के स्वास्थ्य की मंगलकामना करें।
कोरोना महामारी से बचाव के उपायों को अपनाते हुए आगे बढ़ें एवं प्रदेश की तरक्की में अपना हर संभव योगदान करने का संकल्प लें।

समस्त प्रदेशवासियों को
72वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं..

-अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

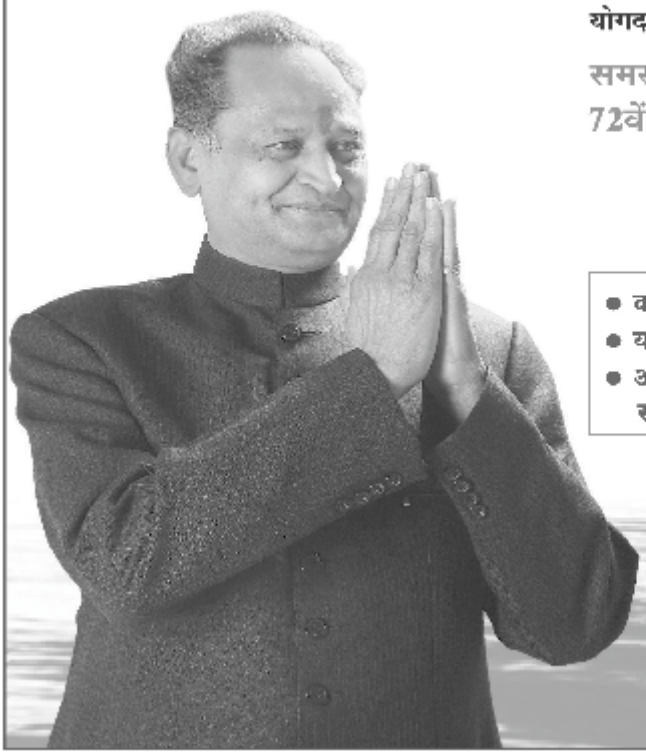

- कोविड-19 टीकाकरण में भी राज्य को मॉडल बनायेंगे
- यह टीका पूर्णतः सुरक्षित है
- अन्य गाईडलाईन्स आने तक पहले की तरह ही सावधानियां अपनायें

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रत्यूष

क्रिकेटरों के लिए नई चुनौती टाइम ट्रायल टेस्ट

जगदीश सालवी

भारतीय क्रिकेटरों की फिटनेस को नये स्तर पर ले जाने के लिए बीसीसीआई 'टाइम ट्रायल टेस्ट' लेकर आया है। जिसे प्रचलित यो-यो टेस्ट के साथ पास करने पर ही भारतीय टीम में जगह मिल पाएगी।

भारतीय क्रिकेट टीम को विश्व की सबसे फिट और चुस्त–दुरुस्त टीम माना जाता है। इसका श्रेय भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) द्वारा कुछ वर्ष पूर्व अपनाए गए 'यो–यो टेस्ट' को जाता है, लेकिन बोर्ड अब खिलाड़ियों की फिटनेस को और अलग व ऊंचे स्तर पर ले जाना चाहता है। इसलिए वह एक नया टेस्ट यो–यो के साथ ही जोड़ रहा है। नए 'टाइम ट्रायल टेस्ट' को बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली व सचिव जय शाह ने मंजूरी दे दी है। अब दोनों टेस्ट पास करना भारतीय टीम में जगह बनाने की अहम शर्त हो गया है।

बीसीसीआई का मानना है कि मौजूदा दौर में जब तक खिलाड़ी पूरी तरह से फिट नहीं है, तब तक वह अपने प्रदर्शन पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाएगा। बोर्ड ने अपने सभी अनुबंधित खिलाड़ियों को इस टेस्ट को पास करने और इसके मापदण्ड के बारे में जानकारी उपलब्ध करवा दी है।

टाइम ट्रायल टेस्ट चैलेंज

बीसीसीआई के नए टाइम ट्रायल टेस्ट के जरिए खिलाड़ियों की स्पीड और सहनशीलता का आंकलन किया जाएगा। बीसीसीआई के मुताबिक अब हर साल फिटनेस का स्तर बढ़ाया जाएगा....

02 किलोमीटर की दूरी प्रत्येक खिलाड़ी को दौड़कर पूरी करनी होगी

8.30 मिनट का समय बल्लेबाजों-स्पिनर और विकेटकीपर को मिलेगा।

8.15 मिनट में तेज गेंदबाजों को यह दूरी तय करनी है।

आसान नहीं यो-यो टेस्ट भी

यो–यो *टेस्ट सॉफ्टवेयर पर आधारित टेस्ट होता है। यह टेस्ट बेंगलुरु स्थित नेशनल क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में लिया जाता है। इसमें खिलाड़ी की मज़बूती का आकलन किया जाता है। इस टेस्ट के लिए खिलाड़ी को दो कोनों के बीच लगातार भागना होता है और इन दोनों कोनों के बीच की दूरी 20 मीटर होती है। खिलाड़ी जब एक कोने से दूसरे कोने पर जाता है तो सॉफ्टवेयर पहली बीप देता है। दूसरे कोने पर पहुंचने पर भी बीप की आवाज आती है और खिलाड़ी का स्कोर रिकॉर्ड होता रहता है।*

19 अंक से ज़्यादा जरूरी

यो–यो टेस्ट पास करने के लिए खिलाड़ी को कम से कम 19.5 अंक लाने होते हैं। इससे कम लाने पर खिलाड़ी को अनफिट माना जाता है।

21 अंक विराट के सर्वाधिक

भारतीय कप्तान विराट कोहली के यो–यो टेस्ट में सबसे अधिक 21 अंक हैं। इसीलिए वह दुनिया के सबसे फिट खिलाड़ी माने जाते हैं।

Pankaj Sanadhya, Director | Pradeep Sanadhya, Director

PBE Power Build Engineers

Authorised Service Centre

Smart solutions. Strong relationships. | HAVELLS | TEXMO | Taro

Repair & Rewinding of All Type/Rating/Make

Works

Near Central Bank Of India, Opp. Ostwal Nagar, Sunderwas, Udaipur (Raj.)
Ph.: 0294- 2491558, 2492199,
Mob.: 94141 65599, 79769 53240 , 94141 69599 , 82097 45329
Email: powerbuildeng@yahoo.com *powerbuildeng@gmail.com*

U.I.H.M. UDAIPUR INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT

(Affiliated to Pathumthani University, Rangsit, Thailand)

Dr. Gajendra Singh Saroha
Owner/Director
+91 94141 57034,
+91 82095 84165

Rajasthan Leading Institute of Hotel Management

-:: Courses Offered ::-

Study work & Settle in Foreign

Earn While you Learn

International Bachelor in Hotel Management (Duration - 04 Year)

- 01st Year Study at UIHM
- 02nd& 03rd Year Study at Thailand
- 4th Year Paid Internship at Thailand/ USA/Australia

International Diploma in Hotel Management (Duration - 20 Months)

- 08 Months Study at UIHM
- 04 Months Study at Thailand
- 08 Months Pain Internship at Thailand/ USA/Australia

-:: We are Different ::-

■ कोर्स के पश्चात् - 100% जॉब गारंटी* - USA/Thailand/Australia/Singapore/India में। ■ कोर्स के बाद सालाना 12 लाख तक की सैलेरी।■ फॉरेन इंटर्नशीप के दौरान 2 से 8 लाख तक का स्टाइपेण्ड, रहना + खाना। ■ प्रत्येक स्टूडेंट को लेपटॉप, यूनिफार्म, फ्रेंच व थाई भाषा, स्पोकन इंग्लिश क्लासेज। ■ ए.सी. हॉस्टल, डिजीटल क्लॉसेज, वर्ल्ड क्लास इन्फ्रास्ट्रेक्चर।

COURSES OFFERED | **100% JOB GUARANTEE**

International Diploma in Hotel Management	Diploma in Hotel Management	International Bachelor in Hotel Management	Bachelor in Hotel Management
Duration - 20 months	Duration - 18 months	Duration - 48 months	Duration - 3 years
Eligiblity - 10+2 (any stream)	Eligiblity - 10+2 (any stream)	Eligiblity - 10+2 (any stream)	Eligiblity - 10+2 (any stream)

For Admission Contact
16, Padmini Marg, Glass Factory Circle, Sundarwas, Airport Road, Udaipur
Email: office.uihm@gmail.com, udaipuryoga@gmail.com,
saroha.gajendra@gmail.com www.uihm.org, www.udaipuryogaclasses.com

Udaipur College of Yoga

PG Diploma in Yoga Therapy
Qualification Graduation Any Stream
Duration - 1 Year (Yearly Ex. Scheme)

प्रत्यूष

शिव और शक्ति का शाश्वत संयोग

महाशिवरात्रि उत्सव स्मरण कराता है कि संकल्प और तप से सबकुछ संभव है। देवी पार्वती प्रयास और निरन्तरता का महत्व जानती है और अन्ततः शिव को पति रूप में प्राप्त कर ही लेती हैं। कोमल भावनाओं और परीक्षा की कठोरता से भरपूर शिव-पार्वती की यह प्रेमकथा प्रेरक भी है.....।

मृदुला बिहारी

अनंत, अगम, अगोचर, अविनाशी शिव कौन हैं? साधारण भक्त के लिए भोलेनाथ, एक तांत्रिक के लिए श्मशान देवता, कहीं संहार के देवता, तो कहीं जीवन के सजग प्रहरी। सदाशिव, भूतनाथ, आशुतोष और नीलकंठ भी हैं और यही शिव, पार्वती के साथ कैलास पर्वत पर आनंदपूर्वक विराजते हैं।

शिव के सदा साथ हैं शक्ति

शिव के दस व्रत हैं - दश शैवव्रत। इनमें महाशिवरात्रि सर्वाधिक बलवान है। फाल्गुन मास कृष्ण चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का पर्व आता है। कृष्णपक्ष में देवताओं की पूजा नहीं की जाती क्योंकि चन्द्रमा का उतार अमांगलिक माना जाता है। किन्तु शिव के लिए मंगल-अमंगल का कोई अर्थ नहीं, क्योंकि वे स्वयं अमंगल के नियंत्रक हैं। यह व्रत धर्म का उत्तम साधन है। यहां धर्म से अर्थ दैनंदिनी व्यवहार से है। धर्म के लक्षण हैं - अध्ययन, अक्रोध, दया, क्षमा, विद्या, शील, शुद्धि, सत्य और संयम। इनकी तलाश और साधना स्वयं ही करनी पड़ती है। हमारी सभी धार्मिक परंपराओं के मूल में प्रकृति का सूक्ष्म रूप छिपा हुआ है। शक्ति, शिव की सहधर्मिणी है। शिव ने जब जैसा रूप धारण किया, शक्ति ने भी उसी अनुरूप अपना रूप बदला- रुद्राणी, शर्वाणी, भवानी, कात्यायिनी, काली, गौरी, हेमवती, शिवा, उमा, सर्वमंगला, ये शक्ति के ही रूपांतरण हैं। शिव-शक्ति रूप बदलते हैं, लेकिन उनके अस्तित्व के गहनतम रहस्य में जो है, वह सदा वैसा ही रहता है।

यूं मिलती है सफलता

पार्वती का प्रेममार्ग बाधाओं से भरा था। किन्तु उनके भीतर कोई अंतर्विरोध नहीं था। उन्होंने माता-पिता से कहा - मैं शिव के आत्मास्वरूप को देखती हूं। वे मेरे लिए बने हैं और मैं उनके लिए। जानती हूं कि शिव को पाना सरल नहीं, मुझे सफलता का कोई मंत्र भी ज्ञात नहीं, लेकिन मैं प्रयास करने में विश्वास करती हूं। विफलता स्वीकार कर सकती हूं, लेकिन प्रयास ही न करना मुझे स्वीकार नहीं। शिव को पति रूप में पाने के लिए वे तप करने लगीं। तप से कुछ भी असाध्य नहीं। महाज्ञानी शिव ने सबकुछ जानते हुए भी गौरी की परीक्षा ली। पहली झलक में ही उनके कालातीत सौंदर्य का अनुमान लगा लिया। उनकी निर्विकार आंखों में प्रेम झलक उठा। प्रेम का यह बंधन ऐसा कि पाणिग्रहण की बेला भी आ गई। वर-वधू के अभिनंदन के लिए मेना-हिमवान ने विपुल उत्सव रचा।

महाशिवरात्रि के दिन विवाह संपन्न हुआ। पार्वती, शिव के साथ कैलास पर्वत आ गई। शिव, उमा को जितना समझ पाते उससे कहीं अधिक उमा, शिव को समझ रही थीं। घर-परिवार के लिए पूर्ण समर्पित पति-पत्नी की प्रेरणा के मूल में शिव-पार्वती ही हैं। उनका दांपत्य आदर्श है, इसलिए शिव-पार्वती हमारे मन में, कला में, धर्म में रमे हुए हैं।

त्रिलोचन भोलेनाथ

देवाधिदेव महादेव देवों में एकमात्र ऐसे देवता है जिनके तीन नेत्र हैं, और देवियों में मां काली के तीन नेत्र हैं। त्रिनेत्र होने के कारण भगवान शिव का एक नाम त्रिलोचन भी है।

भोलेनाथ के दो नेत्र सामान्य हैं। इन नेत्रों को हिन्दू शास्त्रों में चंद्रमा व सूर्य कहकर संबोधित किया है लेकिन तीसरा नेत्र प्रलय को प्रदर्शित करता है। ये तीन नेत्र त्रिगुण को संबोधित है। दक्षिण नेत्र यानी दायां नेत्र सत्वगुण को संबोधित है और वाम नेत्र यानी बायां नेत्र रजोगुण को तथा ललाट पर स्थित तीसरा नेत्र तमोगुण को प्रकट करता है।

ये नेत्र भूत, वर्तमान, भविष्य को संबोधित करते हैं। इसी कारण शिव को त्रिकाल दृष्टा भी कहा जाता है। इन्हीं तीन नेत्रों में त्रिलोक स्वर्गलोक, मृत्युलोक व पाताललोक बसा है। यही कारण शिव त्रिलोक के स्वामी माने जाते हैं। ज्ञात पौराणिक उल्लेखों के अनुसार अभी तक भगवान शिव ने एक बार ही अपने तीसरे नेत्र का उपयोग किया है। शिव महापुराण में वर्णित है कि कामदेव को भस्म करने के लिए भगवान भोलेनाथ ने अपने तीसरे नेत्र को खोला था। कहते हैं प्राचीन समय में जब सती इस दुनिया में नहीं रहीं तो भगवान शिव उनकी याद में काफी दुखी हो गए और अनंत समाधि में चले गए। इसी दौरान दानव तारकासुर ने ब्रह्माजी का तप कर ऐसा वर पाया कि उसकी मृत्यु भगवान शिव के पुत्र के हाथों ही हो। शिव, समाधि में थे उन्हें समाधि से जगाना बेहद जरूरी हो गया तब देवताओं ने कई तरह के प्रयोजन किए लेकिन शिव समाधि से बाहर नहीं आए। तब कामदेव ने समाधि स्थल पर पहुंचकर एक वृक्ष के पीछे से पुष्प बाण चलाया। बाण सीधा, भोलेनाथ के हृदय में लगा। भगवान शिव समाधि से जाग गए और गुस्से में उनका तीसरा नेत्र भी खुल गया। तीसरा नेत्र खुलते ही वहां मौजूद कामदेव जलकर भस्म हो गए।

- अभिजय शर्मा

शिव प्राप्ति की राह में बाधाएं

शिव पुराण में कथा है कि सती शिव की सहभागिनी थीं। शिव भी उनके प्रति अनुरक्त थे। लेकिन सती ने श्रीराम की परीक्षा लेने की भूल कर दी। तभी सती के पिता दक्ष ने यज्ञ का आयोजन किया। सती बिन बुलाए पिता के घर चली गईं। वहां यज्ञ हो रहा था, लेकिन शंकर का कोई स्थान न था। सती के क्रोध का पारावार न रहा। अचानक वज्र विस्फोट हुआ और सती यज्ञ की अग्नि में हू-हू कर जल उठीं। शंकर क्रोध से भर उठे। पत्नी का निर्जीव शरीर लिए भीषण तांडव करते रहे, अंततः विरक्त होकर समाधि में लीन हो गए। सती ने कालांतर में हिमवान और मैना के घर पार्वती रूप में जन्म लिया। अलौकिक सौंदर्य तो सद्गुणों से युक्त गौरी वेद, व्याकरण, नक्षत्रविद्या, तर्कशास्त्र आदि का अध्य ये हमेशा बदलकर भी ज्यों-के-त्यों हैं। यन करती युवा हो गईं। गौरी का मन अपने आराध्य शिव की कल्पनाओं में खोया रहता। उनके हृदय का यह रहस्य मां से छिप न सका। प्रबल विरोध से कहा, 'कहां औघड़ शिव और कहां हमारी कुसुम सुकुमार पार्वती।' गौरी के पिता हिमवान जानते थे कि शिव के समकक्ष और कोई नहीं ठहर सकता। वे आदर्श स्वरूप हैं, त्रिकालदर्शी हैं, किन्तु विवाह में बहुत प्रकार से विचार करने पड़ते हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तुति

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारं ममलेश्वरम् ॥१॥
परल्यां वैजनाथं च डाकियन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥
वारणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे।
हिमालये तु केदारं ध्रुष्णेशं च शिवालये ॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरेण विनश्यति ॥४॥

आरसीए अध्यक्ष का क्रिकेट संघ द्वारा स्वागत

उदयपुर। राजस्थान क्रिकेट संघ(आरसीए) के अध्यक्ष वैभव गहलोत गत दिनों उदयपुर प्रवास पर आए। जिला क्रिकेट संघ के प्रतिनिधि मंडल ने उनका स्वागत किया। इस दौरान आरसीए सचिव महेन्द्र शर्मा, जिला संघ के अध्यक्ष मनोज भटनागर, अरविन्द शर्मा, अनीस इकबाल और मनोज चौधरी मौजूद थे।

लक्ष्यराज सिंह चौथी बार वर्ल्ड रिकॉर्ड में

उदयपुर। एचआरएचग्रुप ऑफ होटल्स के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर लक्ष्यराज सिंह ने कोरोना महामारी के दौर में सिर्फ एक घंटे में स्वच्छता के 12,508 उत्पाद दानकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। उनका यह चौथा वर्ल्ड रिकॉर्ड है। किशोरियों के लिए दान किए सेनेट्री पेड, हेंड सेनेटाइजर, साबुन, टूथब्रश जैसे प्रोडक्ट्स भी इस रिकॉर्ड की सूची में शामिल हैं। राज्यपाल कलराज मिश्र ने भी उन्हें हाल ही में प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया था और समाज सेवा के लिए ऐसे ही तत्पर रहने की प्रेरणा दी थी।

कोटा में भी खुला डी. पी. ज्वैलर्स शोरूम

उदयपुर। रतलाम के डी. पी. आभूषण लिमिटेड ने अपने नए शोरूम का शुभारंभ वल्लभनगर एक्सटेंशन, कोटा में किया। इनके शो-रूम रतलाम, इंदौर, उदयपुर, भोपाल, उज्जैन और भीलवाड़ा में भी हैं। शोरूम का शुभारंभ रतलाम सर्राफा एसोसिएशन के संरक्षक अनोखीलाल कटारिया, उद्योगपति कांतिलाल कटारिया एवं डी. पी. ज्वेलर्स के प्रमुख रतनलाल कटारिया ने किया। इस दौरान डी. पी. ज्वेलर्स से अनिल कटारिया, विकास कटारिया व पुनीत पिरोदिया भी उपस्थित थे।

यूनियन बैंक बड़े बैंकों में शामिल

उदयपुर। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के जयपुर क्षेत्र महाप्रबंधक राम कुमार जागलान ने 1 फरवरी को उदयपुर प्रवास के दौरान क्षेत्रीय प्रमुख अरविन्द कुमार चौधरी के साथ 'ऋण प्रसंस्करण प्रभाग-सरल' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विवेक मीणा उप क्षेत्र प्रमुख, सुरेश अंगुराल सहायक महाप्रबंधक(सरल), धीरज शर्मा मुख्य प्रबन्धक उपस्थित थे। जागलान ने कहा कि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में कॉर्पोरेशन बैंक और आंध्रा बैंक के समामेलन के पश्चात् यूनियन बैंक ऑफ इंडिया भारत के बड़े बैंक के रूप में अग्रणी राष्ट्रीयकृत बैंक होगया है।

छात्रावास निर्माण के लिए भूमि पूजन

उदयपुर। मेवाड़ किसान एवं ग्रामीण शिक्षा प्रसार समिति की ओर से हॉस्टल भवन निर्माण के लिए गत दिनों भूमि पूजन हुआ। समिति अध्यक्ष बन्नाराम चौधरी और समिति सचिव डॉ. बी आर चौधरी ने भवन की नींव भराई का पूजन किया। समारोह में मेवाड़ के अनेक स्थानों के जाट समाज के सदस्य सम्मिलित हुए।

इंग्लिश चैंप पुरस्कार

उदयपुर। सेन्ट्रल पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल में चालू शिक्षा-सत्र के इंग्लिश चैंप के विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। इसके तहत बच्चों के शिक्षण में प्रतिमाह अंग्रेजी भाषा के विकास के लिए मेगा डिक्टेशन, स्पाइस स्पोटिंग, रेसिटेशन, ग्रामर विजार्ड आदि प्रतियोगिताएं कराई गई। जिनमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले दस विद्यार्थियों को निदेशक दीपक शर्मा व प्राचार्य पूनम राठौड़ ने ट्रॉफी प्रदान कर पुरस्कृत किया।

Ravi Kalra
Sandeep Kalra

Cell : 9680511711
9414155258

G.S Traders

Auth. Dealer :

Nice, Rock, FIT-WIT
Bairathi, Lakhani, Sumoto

Gurmukh Kalra
Rahul Kalra

Cell : 9001714646
9929022680

G.S FOOTWEAR

L.L.L 989

hot springs

25, Dhanmandi School Road, Udaipur (Raj.) 313 001

बजट 2021-22

मध्य वर्ग और नौकरीपेशा को झटका

दीपक रस्तोगी

एक दशक में यह पहला ऐसा बजट है, जिसमें प्रत्यक्ष कर में कोई बदलाव नहीं किया गया है। मौजूदा वक्त में इन दरों के मुताबिक आयकर भरना पड़ता है - पांच लाख तक की आय पर कोई टैक्स नहीं, 5 से 7.5 लाख की आय के लिए 10 फीसद कर, पांच से 10 लाख तक के आय के लिए 15 फीसद, 10 से 12.5 लाख तक के आय पर 20 फीसद, 12.5 लाख से 15 लाख तक की आय के लिए 25 फीसद, 15 लाख के ऊपर पहले की तरह 30 फीसद कर देना होता है।

कोरोना संकट और देशवासियों की तमाम उम्मीदों के बीच वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने 1 फरवरी को आम बजट पेश किया। कोरोना महामारी के प्रहार से मंद पड़ी अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए उन्होंने सड़क, परिवहन, रेलवे और ऊर्जा जैसे बुनियादी क्षेत्रों में 37 फीसदी ज्यादा बजट देने का ऐलान किया। वहीं, 5.54 लाख करोड़ रुपए से अधिक के नए प्रोजेक्ट शुरू करने की भी बात कही। इससे रोजगार के मौके बढ़ेंगे। सबकी सेहत का ख्याल रखते हुए स्वास्थ्य बजट में दोगुने से ज्यादा बढ़ोतरी का ऐलान किया तो स्टार्टअप को सौगातें दीं और वरिष्ठ नागरिकों को कुछ सहारा। हालांकि, आयकर दरों में बदलाव न होने से मध्यवर्ग को निराशा हाथ लगी।

लड़खड़ाती अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की दृष्टि से बजट में जिन उपायों का एलान किया गया है, उससे सीधी मार मध्यम वर्ग और वेतनभोगियों पर पड़ेगी। एक तो कोरोना काल में आर्थिक मोर्चे पर जूझ रहे लोगों को बजट में कोई राहत नहीं मिली है। दूसरी ओर, विनिवेश, अवसंरचना के बजट में बढ़ोतरी, कृषि क्षेत्र के लिए आवंटन का कोष जुटाने के लिए सेस के प्रावधान समेत कई ऐसे एलान हैं, जिनसे उपभोक्ता की जेब हल्की होगी। भोजन सामग्री समेत रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाली कई जरूरी वस्तुओं की कीमतें बढ़ेंगी।

न तो कर ढांचे में बदलाव है और न ही आयकर की धारा 80 सी के तहत निवेश पर छूट बढ़ाई गई है। मध्य वर्ग उम्मीद लगाए बैठा था कि स्वास्थ्य से जुड़े खर्च पर करों में छूट मिलेगी, लेकिन बजट में इसे लेकर भी कोई घोषणा नहीं की गई।

आयकर के नियम 80डीडीबी में कोरोना महामारी को शामिल नहीं किया गया। कर नियमों के अनुसार, न्यूरो संबंधित बीमारी, कैंसर, एड्स समेत कई बीमारियों के लिए सेक्शन 80 डीडीबी के तहत सालाना 40 हजार रुपए तक का कर कटौती का लाभ मिलता है। एक दशक में यह पहला ऐसा बजट है, जिसमें प्रत्यक्ष कर में कोई बदलाव नहीं किया गया है। मौजूदा वक्त में इन दरों के मुताबिक आयकर भरना पड़ता है – पांच लाख तक की आय पर कोई टैक्स नहीं, 5 से 7.5 लाख की आय के लिए 10 फीसद कर, पांच से 10 लाख तक की आय के लिए 15 फीसद, 10 से 12.5 लाख तक की आय पर 20 फीसद, 12.5 लाख से 15 लाख तक की आय के लिए 25 फीसद, 15 लाख के ऊपर पहले की तरह 30 फीसद कर देना होता है। बजट में मध्य वर्ग के लिए भी कुछ खास एलान नहीं हुआ।

फायदा

स्वास्थ्य क्षेत्र : इस बार के बजट में सबसे अधिक फायदे में रहा स्वास्थ्य क्षेत्र, जिसे 2.38 लाख करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया गया। स्वास्थ्य बजट में 135 फीसद की बढ़ोत्तरी हुई है। पहले यह बजट 94 हजार करोड़ रुपए था, जिसे बढ़ाकर 2.38 लाख करोड़ रुपए किया गया है।

बुजुर्ग : बुजुर्गों को राहत मिली है। 75 साल के अधिक की उम्र के लोगों पर अब कोई कर नहीं लगेगा। हालांकि, शर्त यह है कि ये छूट उन्हें सिर्फ पेंशन पर दी जा रही है, ना कि बाकी किसी तरीके से हुए कमाई पर।

बैंकिंग और बीमा क्षेत्र : इस बार के बजट में बीमा क्षेत्र में 74 फीसद तक विदेशी पूंजी निवेश का एलान किया गया है, जो पहले सिर्फ 49 फीसद का था। इसके अलावा बैंकों का फंसा हुआ कर्ज दूर करने के लिए अलग से एक कंपनी बन रही है, जो इन फंसे हुए कर्ज को बैंकों से लेकर बाजार में बेचेगी। उम्मीद कि बैंकिंग और इंश्योरेंस सेक्टर में ढेर सारी नौकरियां निकलेंगी।

नुकसान

नौकरीपेशा : नौकरीपेशा इस बजट से उम्मीद कर रहे थे कि इसमें धारा 80सी के तहत छूट की सीमा बढ़ सकती है और साथ ही 2.5 लाख रुपए तक की कमाई पर मिलने वाली छूट के भी बढ़ने की उम्मीद थी। ये उम्मीद इसलिए भी की जा रही थी, क्योंकि पिछले करीब सात सालों से इसमें कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है। आखिरी बार जुलाई 2014 में इस कर छूट की सीमा को दो लाख से बढ़ाकर 2.5 लाख किया गया था और धारा 80 सी के तहत निवेश पर तक छूट की सीमा एक लाख रुपए से बढ़ाकर 1.5 लाख रुपए की गई थी। नौकरीपेशा के लिए बजट खराब रहा।

आम आदमी : तमाम चीजों पर उत्पाद शुल्क और सरचार्ज लगने की वजह से मोबाइल समेत कई चीजें महंगी होनी हैं। आम आदमी के लिए यह बजट निराशाजनक रहा।

महिलाएं : उम्मीद की जा रही थी महिलाओं को और मजबूत करने की कोशिश की जाएगी, लेकिन बजट भाषण में महिलाओं पर वित्त मंत्री ने कुछ भी नहीं कहा।

सोने-चांदी पर कस्टम ड्यूटी को कम किया गया, लेकिन कई चीजों पर यह बढ़ा दी गई, जिससे उनकी कीमतों में बढ़ोतरी हो जाएगी। सरकार ने ऑटो पार्ट्स पर आयात शुल्क को बढ़ाकर 15 फीसद कर दिया है। विदेशी मोबाइल पर आयात शुल्क 20 फीसद बढ़ा दिया है। वहीं देश में बनने वाले मोबाइल और चार्जर पर उत्पाद शुल्क 2.5 फीसद बढ़ाया गया है, यानी इलेक्ट्रॉनिक सामान महंगे हो जाएंगे। सरकार के बजट के बाद सूती, सिल्क, प्लास्टिक, लेदर, इलेक्ट्रॉनिक्स सामान, सौर ऊर्जा उपकरण, आयातित कपड़े, एलईडी बल्ब, फ्रिज/एसी, शराब आदि महंगे होंगे।

पेट्रोल की कीमतों में 2.50 और डीजल की कीमतों में चार रुपए कृषि सेस लगाया गया है। सरकार कह रही है कि यह सेस कंपनियों को चुकाना होगा, लेकिन कंपनियां इस सेस की भरपाई के लिए कीमतें बढ़ाएंगी या नहीं, इसे लेकर कोई आश्वासन नहीं है। पुराने नियमों के हिसाब से कंपनियां अगली कीमत तय करेंगी तो जाहिर है दरें बढ़ा देंगी। मोबाइल फोन और चार्जर महंगे कर दिए गए, जो आज के दौर में आधारभूत चीजें हैं। इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, चमड़े के जूते व सामान्य जूते, आयातित ऑटो पार्ट्स, सिल्क से जुड़े उत्पाद आयातित रत्न(कीमती पत्थर) आदि महंगे हुए हैं। बजट में करीब 14-15 वस्तुओं पर कृषि उपकर का सीधा असर आम आदमी की जेब पर होगा। सरकार का कहना है कि इस प्रावधान से साल में करीब 30,000 करोड़ रुपए मिलेंगे। अधिकारियों का तर्क है कि जिन वस्तुओं पर इस समय कृषि सेस लगाया गया है, उन वस्तुओं पर पहले से ही लगे आधारभूत आयात शुल्क या उत्पाद शुल्क को युक्तिसंगत किया गया है। इसके बाद उस पर कृषि सेस लगाया गया है। वित्त मंत्रालय के अधिकारियों का कहना है कि जब कोई केन्द्रीय कर लगाया जाता है, तो उसमें राज्यों की भी हिस्सेदारी बनती है। चौदहवें वित्त आयोग ने केन्द्रीय करों में राज्यों की हिस्सेदारी का जो फार्मूला दिया है, उसके मुताबिक राज्यों को करीब 40 फीसद राशि देनी पड़ती है। लेकिन जब कोई सेस लगाया जाता है तो उसमें राज्यों के साथ बंटवारा नहीं करना पड़ता है। इसलिए केन्द्र सरकार के पास अतिरिक्त 30 हजार करोड़ रुपए आ जाएंगे।

Diwaker Nath Purohit
Director
Mob.: 94133-19734
96809-29734

''श्री राधा सर्वेश्वरो विजयते''

Sudhaker Nath Purohit
Director
Mob.: 94137-71730
Ph.: 0294-2423433

ADITYA
REFRIGERATION & MOTOR

Deals in: ■ AC Gas R134a ■ CAR AC UNIT ■ SPARE PARTS

47, Janta Marg, Surajpole, Udaipur (Raj.) 313001
E-mail: adityarefrigeration294@rediffmail.com

चुनाव कराने और निर्वाचित दल को सत्ता सौंपने के बावजूद म्यांमार में पूरी तरह लोकतंत्र आ गया था, ऐसा कहना या मानना ठीक नहीं होगा, क्योंकि सेना का राजनैतिक हस्तक्षेप खत्म नहीं हुआ था। उसने संविधान में ऐसे संशोधन करा लिए थे, जिससे संसद की 25 फीसद सीटों पर उसका रिज़र्वेशन कायम रहे। इस व्यवस्था को बदलने के लिए भी संसद में 75 फीसद सदस्यों की सहमति आवश्यक है।

उमेश शर्मा

चिंताजनक है म्यांमार में फौज़ी तानाशाही

पड़ोसी देश म्यांमार में 1 फरवरी को तख्तापलट हो गया। म्यांमार की सेना ने देश की सर्वोच्च नेता आंग सान सू की और राष्ट्रपति विन म्यिंट समेत कई वरिष्ठ नेताओं को हिरासत में लेकर देश में एक साल के लिए आपातकाल की घोषणा करते हुए सत्ता पर कब्जा कर लिया है।

म्यांमार के इस सियासी भूचाल पर सेना का कहना है कि चुनाव में हुई धोखाधड़ी के जवाब में तख्तापलट की कार्रवाई की गई है। तख्तापलट के साथ ही देश के अलग-अलग हिस्सों में सैन्य टुकड़ियों की तैनाती की गई है। सेना के विरोध में जनता सड़कों पर उतर आई है। वहां जो कुछ हो रहा है, वह सत्ता-संघर्ष का नतीजा है। साल 2011 में वहां लोकतंत्र की शुरुआत ही ऐसे समझौते से हुई, जिसके तहत शासन-व्यवस्था में फौज की एक बड़ी साझेदारी है। वहां गृह, रक्षा जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय सेना के पास ही हैं। ऐसे में, नवम्बर 2020 में हुए चुनाव में जब आंग सान सू की की पार्टी नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी (एनएलडी) को करीब 80 फीसदी मत मिले, तब यह अफवाह सियासी फिजां में तैरने लगी कि लोकतांत्रिक सरकार अब सेना से कहीं ज़यादा ताकत अर्जित कर लेगी, और सेना के संविधान प्रदत्त अधिकार छीन लिए जाएंगे। चुनाव में एनएलडी को कुल 476 में से 396 सीटों पर जीत मिली थी। इसी कारण फौज समर्थित यूनियन सॉलिडरिटी ऐंड डेवलपमेंट पार्टी (यूएसडीपी) चुनाव नतीजों पर सवाल उठाने लगी, जिसके बाद वहां आपातकाल लागू कर दिया, जबकि उसी दिन एनएलडी सरकार के दूसरे कार्यकाल की शुरुआत होने वाली थी। जाहिर है, म्यांमार में फिर से नाउम्मीदी की वह लहर पसर गई है, जिससे यह देश काफी मशक्कत के बाद 2011 में बाहर निकला था।

म्यांमार का तख्तापलट भारत के लिए कई अर्थों में गंभीर चिंता का विषय है। भारत सरकार की ओर से इस घटनाक्रम पर बेहद सधे शब्दों में प्रतिक्रिया व्यक्त की गई है, जिसमें सेना की निंदा नहीं है। विदेश मंत्रालय ने बयान में कहा, 'म्यांमार का घटनाक्रम चिंताजनक है। म्यांमार में लोकतांत्रिक परिवर्तन की प्रक्रिया में भारत ने हमेशा अपना समर्थन दिया है। हमारा मानना है कि कानून का शासन और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बरकरार रखना चाहिए। हम स्थिति पर नजर रख रहे हैं।' म्यांमार की सेना और चीन की नजदीकियां किसी से छुपी नहीं हैं। लिहाज़ा, भारत के लिए यह दोहरी चिंता का कारण है। क्योंकि म्यांमार में तख्तापलट उस समय हुआ है जब अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख में भारत-चीन आमने-सामने हैं। उत्तरपूर्व में कई उग्रवादी गतिविधियों को म्यांमार की सीमा से सटे इलाकों से चलाया जाता है। जानकारों के मुताबिक भारत और म्यांमार के बीच 1,640

***पांच** दशकों तक सैनिक शासन रहने के बाद 2015 में हुए चुनावों में आंग सान सू की की पार्टी नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी सत्ता में आई थी। आंग सान सू की म्यांमार की आजादी के नायक रहे जनरल आंग सान की बेटी हैं। साल 1948 में ब्रिटिश राज से आजादी से पहले ही जनरल आंग सान की हत्या कर दी गई थी। सू की उस वक्त सिर्फ दो साल की थीं। नब्बे के दशक में सू की को दुनिया भर में मानवाधिकारों के लिए लड़ने वाली महिला के रूप में देखा गया, जिन्होंने म्यांमार के सैन्य शासकों को चुनौती देने के लिए अपनी आजादी त्याग दी। तकरीबन 22 साल नजरबंदी में गुजारे और इसी दौरान उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया था।*

किलोमीटर की सीमा है। इस सीमा पर ऐसे कई कबाइली समूह हैं जो अलगाववादी हैं। ये म्यांमार की सरकार और भारत सरकार के खिलाफ रहते हैं। इनमें से कुछ गुटों को चीन का समर्थन भी है। साथ ही चीन हमेशा से म्यांमार में सैनिक शासन का बचाव करता रहा है। ताजा घटनाक्रम के बाद जहां दुनिया के तमाम मुल्क सैन्य तख्तापलट पर चिंता ज़ाहिर कर रहे हैं। वहीं, चीन का कहना है कि तख्तापलट के बाद यदि म्यांमार पर पाबंदियां लगाई गईं या अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाया गया, तो हालात बिगड़

आंग सान सू की

सकते हैं। म्यांमार में आगे क्या होगा, यह तो भविष्य ही बताएगा। लेकिन इतना ज़रूर है कि सू की को अंतरराष्ट्रीय समुदाय का पहले जैसा समर्थन शायद ही मिल पाए। रोहिंग्या, मुस्लिमों पर चीन के अत्याचार के मामले में उनका रुख चीन समर्थक माना जाता है, जिसने म्यांमार की 'राष्ट्रवादी' बहुसंख्यक बौद्ध आबादी के बीच उनकी लोकप्रियता भले ही बढ़ा दी हो, पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय में उनका कद घटा है। हालांकि, लोकतंत्र के दमन की किसी कार्रवाई को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

टिप्पणी

महंगाई रोकने के प्रति गंभीर नहीं केन्द्र

नंद किशोर शर्मा

पेट्रोल-डीजल और घरेलू गैस के दामों में लगातार बढ़ोतरी से महंगाई रौद्र रूप अख्तियार कर रही है। पेट्रोलियम उत्पाद की कीमतें दो साल के उच्चतम स्तर पर हैं। इस ओर केन्द्र और राज्य सरकारों का ध्यान देना ज़रूरी है। रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया ने पिछले साल नवम्बर-दिसम्बर में बैंक दरों में कोई बदलाव न करते हुए यह स्पष्ट संकेत दे दिया था कि वह बढ़ती महंगाई को रोकने के प्रति कतई गंभीर नहीं है। इसके साथ-साथ तेल कम्पनियों द्वारा लगातार कीमत में बढ़ोतरी यह बता रही है कि केन्द्र सरकार भी महंगाई से दोहरे हो रहे गरीब-मध्यम वर्ग को कोई भी राहत देने के मूड में नहीं है।

फरवरी 2021 में पेट्रोल व डीजल की कीमतें बढ़ते हुए क्रमश: 100 व 90 रुपए लीटर तक पहुंच गई हैं।

सरकारी नीति के तहत सार्वजनिक क्षेत्र की तेल विपणन कंपनियां इंडियन ऑयल, भारत पेट्रोलियम व हिन्दुस्तान पेट्रोलियम तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतों और विदेशी विनिमय दर के आधार पर प्रतिदिन पेट्रोल व डीजल की दरों में संशोधन करती हैं। इन कंपनियों को दी गई इस ताकत के बावजूद केन्द्र सरकार की अपनी भूमिका है जिसे नकारा नहीं जा सकता। कोरोना के समय में सरकार की कमाई घटी है और विभिन्न योजनाओं और विकास कार्यों के लिए धन उसे चाहिए। पेट्रोल-डीजल से मिलने वाले राजस्व से सरकार को बल मिलता है। चूंकि नया टैक्स लगाना आसान नहीं, उसमें अलोकप्रियता का खतरा होता है, इसलिए सरकार को पेट्रोल-डीजल के जरिए कमाई ज्यादा मुफीद लगती आई है।

जैसे-जैसे पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ते हैं, वैसे-वैसे सरकार की कमाई भी बढ़ती है। किसानों और उत्पादकों को बल देने के लिए भी महंगाई को जरूरी बताया जा रहा है। कोरोना के प्रभाव में एक समय ऐसा आ गया था, जब रोजमर्रा के सामान की कीमतें घटने लगी थीं। खुदरा मूल्य अलाभकारी होने लगे थे। ऐसे में, महंगाई बढ़ने देना आर्थिक सुधार का एक उपाय है। हालांकि, यह विशेष चिंता का विषय है कि पेट्रोल-डीजल के दाम बढ़ने से असली उत्पादकों व किसानों को कितना लाभ होगा? इस पर सरकार को जरूर सोचना चाहिए।

भूल सुधार

'प्रत्यूष' के फरवरी 2021 के अंक में पृष्ठ 15 पर 'नई किताब' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित तरुण कुमार दाधीच के सद्य प्रकाशित खण्ड काव्य 'महीयसी पन्ना' के समीक्षक **मोहन गौड़** का नाम छपने से रह गया था। साथ ही अन्तिम दो पंक्तियां भी नई छप पाईं जो इस प्रकार थीं - 'इसी सारे घटनाक्रम को दाधीच ने सरस और सरल शब्दों में काव्य रूप में सजाया है। इससे पूर्व भी इनकी कुछ बालोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।' असावधानीवश हुई चूक के लिए खेद है।

- प्रबंध सम्पादक

विलुप्ति के कगार पर कठफोड़वा

उर्वशी शर्मा

आम के पेड़ों को कीड़ों से बचाने वाला कठफोड़वा भारत में अब विलुप्ति के कगार पर पहुंच गया है। इस पक्षी की संख्या डेढ़ दशक में 70 फीसदी से भी कम हो गई है, यह स्थिति चिन्ताजनक है। इसकी वजह पेड़ों पर कीटनाशक रासायनिक छिड़काव है। दरअसल, देसी आम के बड़े पेड़ों में मैंगो स्टेम बोरर(आम का तना छेदक) कीड़े को कठफोड़वा खाकर जीवन यापन करते हैं। ये अपने बनाए घोंसले में अण्डे देते हैं। उधर, आम के पेड़ों पर अधिक संख्या में फल पाने के लिए किसान या बागवान प्रति वर्ष फरवरी-मार्च के महीनों में पेड़ों पर रासायनिक छिड़काव करते हैं। इसमें डीडीसी, गैमक्सीन, हैक्टाक्लोर जैसे कीटनाशी रसायनों का प्रयोग होता है। ऐसे में पेड़ों पर बैठने वाले कठफोड़वा इन रासायनिक पदार्थों के सम्पर्क में आते हैं। जब वे अपने घोंसले में पहुंचते हैं तो वहां मौजूद अण्डे प्रभावित हो जाते हैं, जिसके चलते इनमें बच्चे बनने की प्रक्रिया कमज़ोर हो जाती है।

यही कारण है कि पिछले कुछ वर्षों में कठफोड़वा पक्षियों की संख्या में भारी कमी आई है। वैज्ञानिकों का दावा है कि पिछले 15 वर्षों में 70 फीसदी पक्षी कम हो गए हैं।

मैंगो स्टेम बोरर

मैंगो स्टेम बोरर(आम का तना छेदक) कीड़ा पेड़ के तने में घुसकर गलियारा बनाते और अंडा देते हैं। इन कीड़ों के प्रकोप से पेड़ 6 माह में सूखने लगता है। कठफोड़वा इसी कीड़े को खाकर जीवित रहते हैं और अपने बनाए घोंसले में अण्डे देते हैं। इन रसायनों के दुष्प्रभाव से अण्डों में बच्चे नहीं बन पाते। इस प्रकार इन परिन्दों की संख्या तेजी से घटती हुई आज विलुप्ति के कगार तक पहुंच गई है।

कठफोड़वा के पेड़ के तने में अपनी सलेटी रंग की चोंच मारते वक्त इतना दबाव या गति होती है जितनी कि 64 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली कोई गाड़ी किसी चीज से टकराती है।

दो सौ से अधिक कठफोड़वा प्रजातियों में हेमी सेक्रेस रिस्पीज नाम का कठफोड़वा पक्षी उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में पाया जाता है। इनका मुख्य भोजन पेड़ों में छुपे मैंगो स्टेम बोरर कीट होते हैं। ये कीटों को खाकर आम को सुरक्षित रखते हैं। पक्षियों की कमी से पेड़ सूख रहे हैं।

- डॉ. सोमेन्द्र नाथ,
कृषि वैज्ञानिक

कठफोड़वा की संख्या में आई कमी से आम के पेड़ों पर भी संकट छा गया है। पूर्वी इलाकों में बाग सिमट गए हैं। बड़े और ऊंचे पेड़ों पर छुपे मैंगो स्टेम बोरर को खाकर यह पक्षी पेड़ को बचाता रहा। इनकी कमी से पेड़ भी सूख रहे हैं।

- एस एन सिंह,
हार्टिकल्चरिस्ट

कठफोड़वा का घोंसला

कठफोड़वा अपना घोंसला पेड़-पौधों के तने या फिर पेड़-पौधों की किसी सूखी शाखा में बनाता है। इसकी लगभग 200 प्रजातियां दुनिया भर के जंगलों में पाई जाती हैं। अंग्रेजी में इसे वुडपेकर कहते हैं। इसका मतलब है एक ऐसा पक्षी जो लकड़ी में छेद करता है। इसकी सबसे छोटी प्रजाति बार-ब्रेस्टेड पिकुलेट है। जिसका आकार लगभग 8 सेंटीमीटर होता है। ये स्लेट कठफोड़वा दुनिया का सबसे बड़ा कठफोड़वा है, जो पूर्वी एशिया में पाला जाता है। इसकी लंबाई लगभग 60 सेंटीमीटर होती है। कठफोड़वा की चोंच लंबी होती है, जो पेड़ में छेद करने में मदद करती है। इस लंबी चोंच की मदद से कठफोड़वा पेड़ में छुपे कीड़ों को बाहर निकाल लेता है। कठफोड़वा लगभग अपनी लंबी चोंच की मदद से हर सेकंड पेड़ों पर 20 छेद बना सकता है। नर और मादा कठफोड़वा में बहुत ही कम फर्क होता है, जैसे-नर कठफोड़वा का माथा और चोटी और गर्दन काली होती है। दुम और निचला हिस्सा भी काला होता है। जबकि मादा के सीने का रंग सफेद होता है, चोंच स्लेटी और पैर हरे रंग के साथ स्लेटी होते हैं।

जीभ चोंच से 3 गुना लम्बी

वह एक सेकंड में 22 बार अपना सिर पेड़ पर ठोकता है और पूरे दिन में करीब 12 हजार बार वह ऐसा करता है। फिर भी उसके सिर में दर्द नहीं होता। इसका श्रेय उसकी जीभ को जाता है। इसकी जीभ चोंच से लगभग 3 गुना लंबी होती है। यह जीभ उसके मस्तिष्क के नीचे हो करके सिर को सुरक्षा प्रदान करती है। कठफोड़वा का शरीर भी विशेष प्रकार की हड्डियों से बना होता है जो कि वाइब्रेशन को एब्सॉर्व कर लेती हैं।

कुछ खासें बातें

कठफोड़वा का वैज्ञानिक नाम पीसीडी है, ये सर्वभक्षी होते हैं। इनके पंखों की चौड़ाई 12 से लेकर 61 सेंटीमीटर के बीच होती है इनका वजन लगभग 7 से 600 ग्राम के बीच होता है। कठफोड़वा 24 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ सकता है। इनका जीवन काल 6 से 11 सालों का होता है। यह हमेशा अकेले ही रहना पसंद करता है।

कॉर्न वुडपेकर

कठफोड़वे की ज्यादातर किस्में अपनी मज़बूत चोंच से वृक्षों के तनों में छेद बनाकर कीड़े-मकोड़े और इल्लियां ढूंढकर खाती हैं। मगर उ. अमेरिका के पश्चिमी भाग में कॉर्न वुडपेकर नाम का कठफोड़वा होता है। यह भी पेड़े के तने में छेद तो करता है, मगर कीड़े-मकोड़े ढूंढने के लिए नहीं, बल्कि उन छेदों में अपना भोजन बाजं फल(एकॉर्न) जमा करने के लिए, जो कि उसका मुख्य भोजन है। जिसे वह सर्दियों में बड़े मजे से खाता है।

Dharmesh Navlakha
Director
94141 66977

Sahil Navlakha
Director
96106 58614

Solitaire Garden & Banquets

A Perfect Wedding Venue

★ Marriage Garden ★ Banquet Hall ★ Decoration & Lighting
★ Catering Service ★ Rooms

Shobhagpura Bypass Road, Shyam Nagar, Pahada, Udaipur, Rajasthan 313001
Mob.: +91 96106 58614, 77427 41351, Email.: solitairegnb@gmail.com

दिव्यता का रंगमय पर्व : होली

- श्रीश्री रविशंकर

आपको दिव्यता की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए, जिसमें किसी भी किस्म का कोई वियोग नहीं होता। क्या आप अपने आप को इस पृथ्वी, वायु और सागर का हिस्सा मानते हैं? क्या आप इस अस्तित्व में अपने आपको विलीन होने का अनुभव करते हैं? इसे ही दिव्य प्रेम कहते हैं। दिव्यता को देखने का प्रयास न करें। उसे सिर्फ और सिर्फ मान कर चलें। वह वायु की तरह मौजूद है।

होली यह संदेश लेकर आती है कि जीवन आनंदमय होना चाहिए। उस आनंद में दिव्यता होनी चाहिए। और जब मनुष्य दिव्यता का अनुभव करता है तो अन्त:करण में उत्सव का भाव पैदा होता है। जब उत्सव का अनुभव होता है तो जीवन स्वाभाविक रूप से रंगमय हो जाता है। होली रंगों का त्योहार है। प्रकृति की तरह हमारे मनोभाव और भावनाओं के भी अनेक रंग होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति रंगों का फुहारा है, जो बदलता रहता है। अग्नि जैसी आपकी भावनाएं आपको भस्म कर देती है। परन्तु जब वे रंगों के फुहारे-सी होती हैं तो वे आपके जीवन में आनंद ले आती हैं। सभी विचार और भावनाएं स्वयं(आत्मा) से उत्पन्न होते हैं, जो शरीर के भीतर और बाहर आकाश तत्व के जैसे हैं। यह आकाश तत्व आपके जीवन पर राज करता है, और आप सिर्फ एक कठपुतली की तरह हैं। मनुष्यों के साथ कठिनाई यह है कि वे कभी-कभी अपनी भावनाओं और विचारों पर ध्यान देने के लिए समय निकालते ही नहीं हैं कि भीतर कैसे और क्या बदलाव हुआ। हम बिना सोचे और अपनी भावनाओं का समाधान किए बिना कृत्य करते हैं। इसके कई नियम हैं, परन्तु जब आपकी भावनाएं उच्च स्तर की होती हैं तो आप अपनी स्वयं की भावनाओं का शिकार बन जाते हैं। भीतर के नियम चौकीदार और दरबान जैसे हैं, परन्तु घर का मालिक सिर्फ भावनाएं हैं। इसलिए जब घर का मालिक हस्तक्षेप करता है तो दरबान को रास्ता देना ही पड़ता है।

विचार और भावनाएं आती हैं और चली जाती हैं, लेकिन जब आप भीतर जाकर स्वयं की गहन अनुभूति करते हैं तो उसे आप सिर्फ खाली पाते हैं और वही आपका वास्तविक स्वभाव है। जब आप अपनी पहचान मनोभाव, भावनाओं और विचारों से करते हैं तो आप अपने आप को बहुत छोटा और फंसा हुआ पाते हैं। परन्तु वास्तव में आपका भीतर का आकाश तत्व बहुत ही उदार है और उसमें आप पूर्ण शान्ति का अनुभव करते हैं। उन क्षणों में जब आप पूर्णता, प्रेम और शांति का अनुभव करते हैं तो आप स्वयं में फैलाव, असीमितता अनुभव करते हैं, जो आपका वास्तविक स्वभाव है और वही सबसे सुन्दर है। इसलिए, अज्ञानता में भावनाएं आपको परेशान करती हैं और ज्ञान में उन्हीं भावनाओं में रंग आ जाता है। होली के जैसे जीवन भी रंगमय होना चाहिए, जिसमें प्रत्येक रंग स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रत्येक भूमिका और भावनाएं स्पष्ट रूप से परिभाषित होनी चाहिए। भावनात्मक भ्रम, परेशानी उत्पन्न करता है। आप स्वयं से कहें कि मैं प्रत्येक भूमिका के साथ न्याय करूंगा। आप प्रत्येक भूमिका निभा सकते हैं।' मैं अच्छी पत्नी, अच्छा बालक, अच्छा पालक और अच्छा नागरिक हूं।' आप ऐसा मान लें कि आप में यह सभी समानताएं मौजूद हैं। यह सभी वास्तव में आप में मौजूद हैं। इसे बस खिलने दीजिए। विविधता में सामंजस्यता जीवन को आनंदमय और रंगमय बना देती है। उत्सव की अवस्था में मन अकसर दैव को भूल जाता है।

आपको दिव्यता की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए, जिसमें किसी भी किस्म का कोई वियोग नहीं होता। क्या आप अपने आप को इस पृथ्वी, वायु और सागर का हिस्सा मानते हैं? क्या आप इस अस्तित्व में अपने आप को विलीन होने का अनुभव करते हैं? इसे ही दिव्य प्रेम कहते हैं। दिव्यता को देखने का प्रयास न करें। उसे सिर्फ और सिर्फ मान कर चलें। वह वायु के जैसे मौजूद है। आप श्वास के द्वारा वायु को लेकर उसे छोड़ देते हैं। आप वायु को देख नहीं सकते, परन्तु आप को मालूम है कि वायु मौजूद है। उसी तरह दिव्यता सब जगह मौजूद है। सिर्फ दिल उसकी अनुभूति कर सकता है। जब आप पूर्ण रूप से विश्राम में होते हैं, तब आप सम्पूर्ण ब्रह्मांड में दिव्यता की अनुभूति करते हैं। जब आपका मन और शरीर पूर्णत: विश्राम में होता है तो फिर पक्षियों के चहकने, पत्तियों के हिलने, जल के बहने, सब कुछ में दिव्यता की अनुभूति होती है। यहां तक कि पर्वत में भी प्राचुर्य और समृद्ध दिव्यता अनुभव होती है। इन सभी बातों से परे एक शक्ति का आभास अस्तित्व में होता है, वही दिव्यता है। जब स्वाभाविक रूप से उत्सव का उदय होता है तो जीवन पूर्णत: रंगमय बन जाता है।

होलिका का पूजन यूं करें

पौराणिक परम्परा के अनुसार माघ की पूर्णिमा के दिन प्रात: गंध अक्षत आदि से पूजा कर 'होली का डांडा' (जंगल से लाया गया सेमल अथवा अन्य वृक्ष का तना) का रोपण किया जाता है। इसे प्रहलाद भी कहा गया है। इसके चारों ओर काठ, कबाड़ एवं उपले लगाकर होलिका का रूप दिया जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन अपरान्ह/सायंकाल (मुहूर्तानुसार) लोग होली के पास जाकर उसकी पूजा और प्रार्थना करते हैं –

'असृव्याभयसंत्रस्तै: कृत्त्वा त्वं
होलिव्यालिशै: ।
अतस्त्वां पूजायिष्यामि
भूते भूतिप्रदा भव ।।'

अर्थात् हे भूत! राक्षसी के भय से संत्रस्त अज्ञानी लोगों ने तुम्हारी रचना की थी। मैं तुम्हारी पूजा करता हूं, तुम हमें सुरक्षा एवं ऐश्वर्य प्रदान करो।

दहन एवं नवानेष्ठि : फाल्गुन पूर्णिमा को प्रदोष काल में भद्रारहित बेला में होलिका दहन किया जाता है और इस अवसर पर गेंहू, जौ एवं चने की बालियों को होली की ज्वाला में सेक कर 'नवानेष्ठि' होती है। कुछ लोग होली की आग को घर लाकर उससे अपने आंगन में काठ एवं उपले जलाकर उसमें नवान्न एवं गुड़ के पकवानों से नवान्नेष्ठि करते हैं।

धूलि वंदन या धूलैण्डी : होलिका दहन के अगले दहन सभी बालक, युवा, वृद्ध, नर-नारी होली की भस्म को माथे पर लगाते हैं। एक-दूसरे के मुख पर अबीर-गुलाल लगाकर गले मिलते हैं और सारे गिले-शिकवे दूर करते हैं। भांग-ठण्डाई छानना, गुझिया-मिठाई खाना और पिचकारियों से रंग चलाकर एक-दूसरे को रंगों में सराबोर करना इस वासन्तिक त्योहार की मादकता को द्विगुणित कर देता है।

– पं. हीरालाल नागदा

पाठक पीठ

'प्रत्यूष' का फरवरी 21 का अंक अच्छा बन पड़ा। स्वास्थ्य संबंधी आलेख काफी उपयोगी लगे। पिछले 18 वर्ष से नियमित प्रकाशित इस पत्रिका को पारिवारिक पत्रिका कहा जा सकता है। इसमें लगभग हर आयु वर्ग की रूचि की सामग्री रहती है।

राकेश जैन, जीएम, आर्कगेट

फरवरी 21 के प्रत्यूष का सम्पादकीय आलेख 'कोरोना ने उतारी पटरी से अर्थव्यवस्था' सटीक और स्थिति का सही विवेचन करने वाला था। 'बच्चों पर ज़्यादा सख़्ती ठीक नहीं' आलेख भी अभिभावकों के लिए उपयोगी था।

महेश जेठा, व्यवसायी

'प्रत्यूष' का मैं पिछले कई वर्षों से नियमित पाठक हूं। अच्छी और स्तरीय पत्रिका है, संसाधनों के अभाव में भी नियमितता बनाए रखना बड़ी बात है। इसमें प्रकाशित सामग्री का चयन भी सावधानी से होता है।

दिलीप ओस्तवाल, उद्यमी

'प्रत्यूष' के फरवरी अंक का कवर पृष्ठ अच्छा बन पड़ा। जिसमें महान लोकतंत्र कहलाने का दावा करने वाले अमरीका में राष्ट्रपति चुनाव और परिणाम के बाद की राजनैतिक आक्रामकता को दर्शाया गया है।

राजेश भाटिया, प्रबंधक, आर्कगेट

सुर, नर्तन और अभिनय के शरद रंग

पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से उदयपुर(राज.) स्थित शिल्पग्राम के दर्पण सभागार में त्रिदिवसीय इन्द्रधनुषी सांस्कृतिक संध्या 28 से 30 जनवरी तक सम्पन्न हुई। सुर, नर्तन और अभिनय की इस शारदीय त्रिवेणी में जहां विभिन्न राज्यों के कलाकारों ने अपनी सांस्कृतिक विरासत की रसवर्षा की वहीं कलाप्रेमियों ने इसमें सराबोर होते हुए खूब आनंद लिया। 'शरद रंग' से सम्बोधित इस आयोजन की शुरुआत जयपुर घराने की सुविख्यात नृत्यांगना तरुणा व्यास के कथक से हुई। उन्होंने सहकलाकारों के साथ ऐसा समां बांधा कि दर्शक 'वाह-वाह' कर उठे।

अजय आचार्य

इसके बाद शरद तराना की प्रस्तुति उत्कृष्ट बन सकी जिसमें कथक के तत्वों का प्रयोग तथा लयकारी के साथ नर्तन का मिश्रण दर्शनीय बन सका। प्रस्तुति में तरुणा व्यास के साथ अनुभा शर्मा, मिष्ठी त्रिवेदी, दक्षिका नरूका, आयुषी सेहल, आंचल जोशी, भारती शर्मा तथा गिरीश कुमार ने प्रस्तुतियां दी। इससे पूर्व केन्द्र की निदेशक किरण सोनी गुप्ता ने अतिथियों व कलाकारों का स्वागत करते हुए आयोजन की विस्तार से जानकारी दी।

शरद रंग के दूसरे दिन अहमदाबाद की नृत्यांगना शीतल मकवाना व उनके साथियों की भरतनाट्यम शैली में प्रस्तुति से वातावरण कृष्णमय हो उठा। शीतल के नेतृत्व में 10 नृत्यांगनाओं ने दक्षिण भारतीय नृत्य शैली भरतनाट्यम के तत्वों की सुर, नर्तन और अभिनय के बेहतरीन सामंजस्य के साथ प्रस्तुति दी।

शीतल और दल ने नृत्य-नाट्य और प्रेम के प्रतीक रसराज का प्रदर्शन किया। प्रस्तुति में श्रीकृष्ण व उनके सुंदर रूप के वर्णन का निरूपण किया गया तथा राधा और गोपियों के साथ उनके दिव्य प्रेम को दर्शाया। इसमें रूठने, मनाने जैसे रसों का सम्मिलन था। सखी, गोपी, राधा इन सब के जीवन का आधार योगेश्वर श्रीकृष्ण ही हैं। उनकी पत्नियों एवं प्रेमिकाओं में राधा के प्रेम को सर्वोच्च स्थान मिला है। यहां गोपियों और राधा की मन:स्थिति को कई रंग में निरूपित किया गया। प्रेम की मूर्ति हैं कन्हैया, प्रेम का पर्याय हैं कान्हा और प्रेम का प्रतीक हैं कृष्ण। कृष्ण के साथ गोकुल से जुड़े कई मधुर प्रसंग उत्कृष्ट ढंग से दर्शाये गये। प्रस्तुति में संगीत पक्ष जहां प्रबल था वहीं कलाकारों ने अपनी भाव सम्प्रेषणता से प्रस्तुति को सशक्त बनाया।

'शरद रंग' के आखिरी और तीसरे दिन गोवा की प्रसिद्ध गायिका मुग्धा गावकर ने अपने मधुर गायन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। गोवा के फोण्डा की रहने वाली मुग्धा ने गायन की शुरुआत राग पुरियाधनाश्री से की जिसमें उनकी गायकी के ठहराव और सुरों की पकड़ का एक अलग ही अन्दाज दिखा। पहले मंथर और फिर विलम्बित लय पर उन्होंने अपने कंठ की मिठास से वातावरण को सुरीला बनाया।

इसके बाद 'ओम नमो भगवते वासुदेवाय.....' 'पिया अब घर आजो मोरे.....' 'ऐसी लागी लगन.....' 'सांवरे के रंग रांची....' में उनकी गायकी का अनूठा रंग देखने को मिला।

मुग्धा के साथ संवादिनी शुभम नाइक, तबले पर ऋषिकेश फड़के, सुर संगत पृथा गावकर और मंजीरे पर सुरमनाथ ने संगत की।

जनजाति कला कार्यशाला

पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के शिल्पग्राम में ही पांच दिवसीय 'ट्राइबल कला पर्व कार्यशाला' 9 फरवरी को सम्पन्न हुई। इसमें मध्यप्रदेश राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ के 38 कलाकारों ने भाग लेकर पिथौरा, वर्ली, राजस्थान और गुजरात के भीलआर्ट और मध्यप्रदेश की शैलियों पर पारम्परिक पेंटिंग्स बनाई। उद्घाटन केन्द्र निदेशक किरण सोनी गुप्ता व सेवानिवृत्त पूर्व निदेशक अदिति मेहता ने किया। भोपाल के वेंकट रमण सिंह श्याम ने प्रतिभागियों को चित्रकारी के गुर सिखाए।

पंजीयन संख्या 617 वाई

जय सहकार

स्थापना: 18–02–1959

UDAIPUR

उदयपुर क्रय-विक्रय सहकारी समिति लि.

प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)

संस्था के कार्य एक नज़र में...

- रसायनिक खाद, उन्नत बीज, कीटनाशक औषधियों का विपणन एवं वितरण कृषि उपज मण्डी दुकान नं. 36 से।
- आढ़त पर कृषि उपज का क्रय–विक्रय कर उत्पादकों को उचित मूल्य दिलाना, नकद भुगतान की सुविधा देना एवं कृषि उपज की रहन पर ऋण ब्याज उपलब्ध कराना जिसमें सदस्यों को कृषि उपज का उचित मूल्य मिल सके।
- राज्य सरकार की नीति के अनुसार लक्षित वितरण प्रणाली के अंतर्गत वस्तुएं वितरण करना।
- समर्थन मूल्य पर खाद्यान्नों की खरीद करना।
- दैनिक उपयोग की वस्तुओं का उचित मूल्य पर वितरण करना
- पशुपालकों के लिए सस्ती दर पर राजफेड का पशु आहार वितरण।
- मिड–डे मिल (पोषाहार) परिवहन।
- वाटर प्लांट (मेवाड़ जल धारा) के नाम से समृद्ध जल 20 लीटर जार में उपलब्ध कराना।
- उदयपुर डिवीजन की सहकारी संस्थाओं के माध्यम से बिनानी सीमेन्ट की बिक्री।

आशुतोष भट्ट
प्रशासक

हीरालाल मीणा
मुख्य प्रबंधक

कवि सम्मेलन

प्रेम कोमल बूंलिया

कवि सम्मेलन के रंगीन इश्तिहार और अनवरत भारी स्वर उगलते लाउड स्पीकर ने हमारे कवि मन को झकझोरा। हम चहकते हुए इश्तिहार पढ़ने में तल्लीन थे कि एक महाशय ने हमारे कंधे पर हाथ रखा। 'अमायार, काव्य के शौकीन लगते हो ?' हमने ऊपर से नीचे तक उनका मुआयना किया। सफेद झक खादी के कुर्ते पर बास्केट, लम्बे बाल, चेहरे पर धूप का चश्मा, विशेष जतन से बांधी धोती और पैरों में घिसी चप्पल।

'तुमने कवि सम्मेलन का टिकट खरीदा है ?

हमने कहा 'नहीं' और फिर इश्तिहार पढ़ने में मशगूल हो गये।

'सुनो, कवि सम्मेलन सुनना चाहते हो तो मैं तुम्हें फ्री पास दे सकता हूँ।'

हमने कहा – 'क्यों देंगे आप हमें फ्री पास ?' न तो हम कवि हैं और न ही किसी कवि के रिश्तेदार और तो और हमारी झोली में कोई अच्छी सी सरकारी नौकरी भी नहीं जिसके बलबूते पर फ्री पास के लिए अधिकृत हों।

उन्होंने कहा – 'न सही बरखुरदार, फिर भी हम देंगे तुम्हें फ्री पास लेकिन इसके बदले तुम्हें एक काम करना होगा।'

हमने पूछा – 'वो क्या ?'

'घबराओ नहीं कोई बड़ा काम नहीं है। सिर्फ तुम्हें यह करना होगा कि जब हम कविता पढ़ने मंच पर चढ़ें तब और समाप्ति पर तुम्हें जोर-शोर से ताली बजानी है।'

दिल ने कहा यह कौन सा मुश्किल काम है, ले ले बेटे पास। हमने कहा, 'ठीक है।'

उन्होंने पूछा – 'तुम्हारे दोस्त कितने हैं ?'

हमने कहा – 'यही कोई बीस पच्चीस।'

उन्होंने कहा – 'उन्हें भी ले आना। आठ-दस के लिए तो यह पास है बाकी को गेट कीपर को हमारा संदर्भ देना, वह उन्हें प्रवेश दे देगा।'

उनके इस उपकार का कारण अगर तालियां बजाना ही है तो यह तो बहुत छोटा काम है। इसके बदले इतने महंगे फ्री पास ? हमारी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

उन्होंने कहा – 'भाई, किस सोच में डूब गये ? क्या आपको और आपके दोस्तों को ताली बजानी नहीं आती ? या यह जो उपहार मैं दे रहा हूँ कम है ?'

हमने कहा – 'नहीं, नहीं ऐसी बात नहीं है हम तो-तो।'

'हाँ, हाँ कहो, क्या तुम्हें ताली बजाना नहीं आता ? अगर नहीं आता तो कोई बात नहीं, अभी वक्त है। कवि सम्मेलन कल रात है, तब तक प्रेक्टिस कीजिये।'

हमने कहा – 'ठीक है' और पास के लिए हाथ बढ़ा दिया।

उन्होंने पास के साथ एक और गुरु मंत्र भी हमें दिया कि पाण्डाल में बाईं तरफ वाले कोने में आप दोस्तों के साथ खड़े रहें।

'बाईं तरफ या दांई तरफ उससे क्या फर्क पड़ता है ?'

'पड़ता है बरखुरदार पड़ता है' मैं चाहता हूँ तुम मेरी नजरों के सामने रहो।

हमने कहा – 'ठीक है।'

फ्री पास लेकर खुश होते घर लौट आये। हमारे जिम्मे बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी थी। सभी दोस्तों से कॉन्टेक्ट करना था। ताली बजाने की प्रेक्टिस करना और अगर दोस्तों को ताली बजानी नहीं आता तो उन्हें भी प्रेक्टिस देना था।

हम ठीक वक्त पर कवि सम्मेलन लूटने पहुंच गये। कुछ पास से और कुछ गेटकीपर द्वारा अन्दर ठेल जाने से।

हमने पाण्डाल में मंच की बाईं तरफ का हिस्सा कब्जाया।

एक महाशय अपने भारी भरकम शरीर और सलवटों वाली अस्त-व्यस्त धोती सम्हालते मंच पर आये। धोती का पल्लू खोसते माईक पर मुंह सटाए कविता पढ़ने लगे –

'घासलेट की लाइन में
खड़े-खड़े जम्हाई आई
और हम लेट कर
अपनी बारी का इंतजार करने लगे।'

तड़ातड़ मंच की दाईं तरफ से तालियां गूंज उठी। हमारी तो समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह किस प्रकार की कविता है और इसमें ताली बजाने जैसी क्या बात है ?

दूसरे महाशय जब बेसिर पैर की कविता परोस रहे थे तब मंच के ठीक सामने से तालियां बजने लगी। तीसरी महाशय के वक्त पिछवाड़े से तालियों की गूंज सुनाई पड़ी जब वो कह रहे थे –

'रात शराब के नशे में,
हम खूंटे से बंधी भैंस से,
लिपट प्रेमालाप
को तड़प उठे।'

भैंस से कोई प्रेमालाप ? और उस पर भी हमने पास खड़े महाशय के कंधे पर हाथ धर पूछा – 'भाई यह कैसी कविता है ?'

उन्होंने हाथ को झटक कर परे किया और घूरते हुए बोले 'लगता है की तुम्हें कविता की समझ नहीं है ?'

हम बोले – 'इसमें कविता और साहित्य जैसा कुछ भी तो नहीं है।'

'तुम असाहित्यिक और नीरस आदमी लगते हो। भाड़े पर आए हो क्या ? क्यों बेकार में जगह रोक कर भीड़ बढ़ा रहे हो। जाओ किसी दुकान से कुल्फी ले कर खाओ अभी बच्चे लगते हो।'

हमने कहा – 'किराये से तो नहीं आये। हाँ फ्री पास पर जरूर आये हैं।'

'ठीक है, ठीक है, चुपचाप कविता सुनो और हमें भी सुनने दो।' फिर बड़बड़ाने लगे 'पता नहीं कहां-कहां से साहित्य के दुश्मन चले आते हैं,

आयोजक कैसे-कैसे लोगों को फ्री पास देकर हम जैसों की साहित्यिक भावनाओं पर कुठाराघात करते हैं।'

हमने होंठ सी लिए। बेकार अपने आपको असाहित्यिक कहलवाने से डर गये।

थोड़े इन्तजार के बाद हमारे कवि महाशय कविता पढ़ने आए। उन्होंने माईक पर पहुंचते ही एक भरपूर नज़र मंच की बाईं ओर डाली। हम चुपचाप खड़े थे। थोड़ी देर पहले हमें असाहित्यिक घोषित किया जा चुका था उसी सदमे से हम उबर नहीं पाये थे।

मंच पर खड़े कवि महाशय ने हमें घूरा और ताली बजाने का संकेत किया। हम नींद से जागे और धड़ाधड़ तालियां पीटने लगे। उन महाशय का सीना तन गया। वे कविता पढ़ने लगे –

'रेल की पटरी पर चलते-चलते
सारे डिब्बे पटरी से उतर गये
सड़क पर कीचड़ था हम चले जा रहे
उसने एक नजर देखा तो फिसल गये।'

हम अपने मोर्चे पर मुस्तैदी से डटे हुए निहायत ही जागरूक श्रोता की तरह बीच-बीच में 'वाह-वाह' कर उनका हौंसला बढ़ा रहे थे। पास खड़े महाशय ने हमें घूरते हुए पूछा – 'क्या यह तुम्हारा रिश्तेदार है ?' हमने कहा – 'नहीं जी, रिश्तेदार कैसा।' हमारे खानदान ने तो भूल से भी कभी कविता के दर्शन नहीं किये। ये तो हम ही हैं जो कड़ी वर्जनाओं के बावजूद कवि सम्मेलन में आ गये। हमारा मतलब है हमने खानदानी इज्जत को बट्टा लगा दिया है।'

उन्होंने कहा – 'ठीक है, ठीक है, घर से भागे हुए लगते हो ? लेकिन इतनी फूहड़ कविता पर तुम 'वाह-वाह' करके अपनी असाहित्यिक भावनाओं का मखौल क्यों उड़ा रहे हो। चुपचाप कविता सुनो।'

हम चुप होकर कविता सुनने लगे। मंच पर कविता पाठ करते महाशय ने हमें आंखों से घुड़का तो हमें अचानक ख्याल आया कि 'वाह-वाह' के लिए उन्होंने हमें अलग से पांच रुपये देने का वादा किया है। रिश्वत के इस हिस्से को हम दोस्तों के साथ शेयर नहीं करना चाहते थे, इसीलिए यह राज उनसे छुपाया है। हम वाह-वाह कर उठे। 'वाह-वाह' की जिम्मेदारी हमारी अकेले की थी।

पास खड़े महाशय ने हमें हिकारत से घूरा और दूर जा खड़े हुए।

कविता समाप्ति पर हमने जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट की। वे सज्जन मंच के पीछे अदृश्य हो गये तो हम मंच के पिछवाड़े लपके पांच का नोट लेने को। वे मुकर गये। उनके अनुसार हमने 'वाह-वाह' में कंजूसी की थी। हम मुँह लटकाकर लौट आये।

कहना न होगा कि कवि सम्मेलन हमें महंगा ही पड़ा। घर पर किसी तरह यह खबर पहुँच गई कि हम कवि सम्मेलन में गये हैं। इतनी जल्दी तो किसी की कन्या के घर से भाग जाने पर भी खबर नहीं होती।

दरवाजे पर हमारे परम पूज्य पिता श्री चरणपादुका लिए तैयार खड़े थे। आगे क्या हुआ आप समझ ही गये होंगे। हमने तौबा की कवि सम्मेलन में जाने की। हमारा हाल वैसा ही था कि 'माया मिली न राम।' हम तो बेवजह ही हलाल हुए वरना कवि सम्मेलन और साहित्य से तो हमारा दूर का भी नाता नहीं। हमारी तो पीढ़ियां ही साहित्य से अछूती हैं। पाँच रुपये के लालच में खानदान को धब्बा लगा बैठे। यह गुनाह हमने किया है, दोस्तों, आप न कर बैठना।

चंचल की आवाज में था लोक संगीत का वैभव

– महिम जैन

भजन गायक नरेन्द्र चंचल की विदाई एक ऐसी क्षति है, जिसे संगीत की दुनिया में हमेशा महसूस किया जाएगा। एक ऐसी आवाज का मालिक हमारे बीच से चला गया है, जो हमें रूहानी सुकून से भर देता था। एक ऐसी आवाज, जिसे दूर से ही थोड़ा-बहुत सुनकर ही सहज पहचाना जा सकता है।

ऊंची तान में माता के भजनों का अनूठा ओज अपनी वाणी से उन्होंने बिखेरा। उनके गाए 'तूने मुझे बुलाया शेरावालिये' या फिर 'चलो बुलावा आया है' सुनते ही मन औचक माता के दरबार में पहुंच जाता है। शायद इसलिए कि इनमें कोई बनावटीपन नहीं है।

आरम्भ में उन्होंने बुलंद अंदाज में बुल्ले शाह के कलाम गाए। अमृतसर में जन्मे नरेन्द्र चंचल कई वर्ष पहले दिल्ली आकर बस गए थे। उन्होंने 80 वर्ष की आयु में 22 जनवरी को देह त्याग किया।

पंजाबी परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन पर सबद शैली के बजाय सूफी शैली का ज्यादा प्रभाव था। दूर से आती और दूर तक जाने का एहसास कराती उनकी आवाज में एक आह्वान था, इसलिए भजन की दुनिया में उन्हें स्थान बनाने में बहुत वक्त नहीं लगा।

उन्हें केवल भजन-कीर्तन के लिए ही नहीं, बल्कि बुल्ले शाह जैसे सशक्त भक्त कवि की रचनाओं को आम लोक व्यवहार में लाने का भी श्रेय है। उन्हें 1973 में ज्यादा ख्याति राज कपूर की फिल्म बॉबी में गाए गीत, 'बेशक मंदिर-मस्जिद तोड़ो .... पर प्यार भरा दिल कभी न तोड़ो .....' के लिए मिली थी। इसके अगले ही साल आई फिल्म 'बेनाम' में उन्होंने न केवल एक बेहतरीन गीत गाया, बल्कि गायक के रूप में अभिनय भी किया था। 'मैं बेनाम हो गया.....' हिन्दी फिल्मों के अमर गीतों में शामिल है। मोहम्मद रफी के साथ गाया गीत 'तूने मुझे बुलाया शेरावालिये.....' को भला कौन भूल सकता है ? चंचल की आवाज की सबसे बड़ी खासियत आलाप है। लहराती सुरीली आवाज, जिसमें खनक की पुरजोर मौजूदगी अलग भाव पैदा करती है। अपेक्षाकृत पतली या मीठी आवाज सुनकर ऐसा लगता है कि आवाज विशेष रूप से प्रार्थना के लिए ही बनी है। उत्तर भारत में रात्रि जागरणों, माता की चौकी इत्यादि में नरेन्द्र चंचल की बहुत मांग रहती थी। उन्होंने न जाने कितने भजन गायकों को प्रेरित किया। अनूप जलोटा की आवाज में शास्त्रीयता गूंजती है, वहीं नरेन्द्र चंचल की आवाज में लोक संगीत का वैभव बसता है। वह आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन हमेशा आम आदमी के भजन गायक बने रहेंगे।

स्वादिष्ट पकवानों के संग

होली के त्योहार का मजा

अगले माह होली का त्योहार है। ऐसे में आप स्वादिष्ट मिठाइयां और पकवान बनाने के बारे में अभी से ही कुछ सोच रही होंगी। आप चाहें तो कुछ ऐसे पकवान बनाने की प्लानिंग कर सकती हैं, जिन्हें आप इस रंगीले त्योहार पर घर आने वाले मेहमानों की खातिरदारी के लिए पेश कर सकें। प्रस्तुत हैं, ऐसे ही कुछ पकवान की विधियां।

पुष्पा जांगिड़

काजू गुझिया

सामग्री :
खोल के लिए : मैदा-250 ग्राम, वनस्पति घी - 65 ग्राम
भरावन के लिए : काजू के छोटे-छोटे टुकड़े-200 ग्राम, कुटी मिश्री : 50 ग्राम, किशमिश - 20 ग्राम, नारियल चूरा : 50 ग्राम।
तलने के लिए : वनस्पति घी या रिफाईंड तेल - आवश्यकतानुसार
विधि :मैदे में घी मिलाकर मैश करें। आवश्यकतानुसार पानी डालकर कड़ा गूंध लें। गीले कपड़े से ढककर रख दें। भरावन सामग्री को मिला लें। तैयार मैदे की छोटी-छोटी पेड़ियां बनाकर पतली गोल पूरी बेल लें। प्रत्येक पूरी को गुझिया के सांचे में रखकर भरावन सामग्री भरें। फोल्ड करके सांचा दबा दें। मंदी आंच पर हल्की ब्राउन होने तक गुझिया तलें।

पालक पनीर मिनी कचौरी

सामग्री :
खोल के लिए: मैदा 250 ग्राम, नमक स्वादानुसार, घी 65 ग्राम।
भरावन के लिए:

बारीक कटा पालक 250 ग्राम, मैश किया पनीर, 200 ग्राम, बारीक कटा अदरक 1 छोटा चम्मच, कटी हरी मिर्च 1 छोटा चम्मच, नमक-स्वादानुसार, काली मिर्च आधा छोटा चम्मच, दरदरा जीरा 1 छोटा चम्मच, दरदरा धनिया 1 छोटा चम्मच, अमचूर पाउडर आधा छोटा चम्मच, बेसन 1 बड़ा चम्मच, रिफाइंड तेल 1 छोटा चम्मच।
तलने के लिए : रिफाइंड तेल : आवश्यकतानुसार।
विधि : : मैदा, नमक और घी मिलाकर मसलें। आवश्यकतानुसार पानी मिलाते हुए कड़ा गूंध लें। कड़ाही में रिफाइंड तेल डालकर भरावन की सामग्री भून लें। मैदा की छोटी लोइयां बनाएं। हर लोई को हथेली पर फैलाकर भरावन रखें। किनारों को समेटते हुए कचौरी का आकार दें। अब कचौरियों को गर्म रिफाइंड तेल में मंदी आंच पर कुरकुरी होने तक तल लें।

रंगीले नमक पारे

सामग्री : मैदा 200 ग्राम, रवा 50 ग्राम, नमक स्वादानुसार, चाट मसाला 1 छोटा चम्मच, अजवायन 1 छोटा चम्मच, चुकुन्दर पेस्ट 2 बड़े चम्मच, पालक पेस्ट 2 बड़े चम्मच, हल्दी पाउडर 1 छोटा चम्मच, रिफाइंड ऑयल आवश्यकतानुसार।
विधि : मैदा, रवा, नमक, चाट मसाला, अजवायन और 50 मिली तेल मिला कर अच्छी तरह मले। अब इसके तीन भाग कर लें। एक में चुकंदर पेस्ट, दूसरे में पालक पेस्ट और तीसरे में हल्दी पाउडर मिलाएं। तीनों को आवश्यकतानुसार पानी डालते हुए कड़ा गूंध लें। तीनों रंग के मैदे को मिलाकर मोटी रोटी की तरह बेल लें। चाकू से मनचाहे नाप के तिरछे नमक पारे काट लें। तेल गर्म करके मंदी आंच पर नमक पारे तल लें।

प्रत्यूष

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह आपके लिए सामान्य सा प्रतीत होता है, स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक एवं मानसिक परेशानियाँ बढ़ सकती हैं, आर्थिक मामलों में भी सजगता आवश्यक है। जीवन साथी का पूर्ण सहयोग, संतान पक्ष से तनाव, आँख-गला-नाक एवं उदर सम्बन्धी परेशानी संभव है।

वृषभ

गृहस्थ जीवन में परेशानी, आर्थिक अस्थिरता, वाहन संभलकर चलावें। मित्रों के साथ मनमुटाव हो सकता है, स्वयं पर नियन्त्रण रखें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, शत्रु पक्ष हावी हो सकता है।

मिथुन

किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में संयम रखें अन्यथा कोर्ट कचहरी जाना पड़ सकता है। यात्रा में एहतियात बरतें, नया कारोबार शुरू कर सकते हैं, नौकरी भी लग सकती है। सामाजिक मान-सम्मान बढ़ेगा, सर्दी-बुखार एवं त्वचा सम्बन्धित रोगों से कष्ट सम्भव, परिवार में किसी नये सदस्य के आगमन से खुशी होगी।

कर्क

आर्थिक पक्ष नाजुक, कर्म क्षेत्र में परिवर्तन के लिए अच्छा समय है, प्रयास कर सकते हैं। वरिष्ठजन से लाभ, जमीन-जायदाद के मामले पेचिदा हो सकते हैं। भाई-बहिनों से मनमुटाव की संभावना, अनावश्यक खर्चों से बचें। आपका एवं जीवन साथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

सिंह

मास का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा। कार्यों में दूसरों से सहायता की अपेक्षा रहेगी। कार्य की अधिकता से तनाव, किसी पर भी आँख मूंद कर भरोसा न करें। यात्रा के योग हैं, माँ के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, पारिवारिक दृष्टिकोण से समय थोड़ा प्रतिकूल है, सावधान रहे।

कन्या

कार्यों के निस्तारण में अस्थिरता, लेन-देन में सावधानी बरतें, प्रतिस्पर्द्धा में विवेक को बनाए रखें। संतान की ओर से शुभ समाचार मिलेगा, सर्दी, जुकाम एवं खाँसी से परेशानी। चिकित्सकों से परामर्श लें। वरिष्ठों का सम्मान करें।

तुला

स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहेगा, झूठ से बचें, आय के साधन बढ़ेंगे। नौकरी में अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है, विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल, नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं, विदेश यात्रा के भी योग हैं। वाहन सावधानीपूर्वक चलाएं, स्वास्थ्य की दृष्टि से माह प्रतिकूल रहेगा।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
5.3.2021	फाल्गुन कृष्ण सप्तमी	श्रीनाथजी पाटोत्सव(नाथद्वारा)
6.3.2021	फाल्गुन कृष्ण अष्टमी	सीताष्टमी(जानकी जन्म)
8.3.2021	फाल्गुन कृष्ण दशमी	स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती/विश्व महिला दिवस
11.3.2021	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी	महाशिवरात्रि/विश्व गुर्दा दिवस
28.3.2021	फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा	होलिका दहन
29.3.2021	चैत्र कृष्णा प्रथमा	छारेण्डी व धूलण्डी/शब-ए-बारात
30.3.2021	चैत्र कृष्णा द्वितीया	बादशाह मेला(ब्यावर)
		राजस्थान स्थापना दिवस

वृश्चिक

किसी नये कार्य से परहेज करें, प्रतियोगिता से लाभ मिलेगा, पदोन्नति के योग बनेंगे, मानसिक तनाव से बचें, विद्यार्थियों के लिए माह अनुकूल, परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा, दूसरों से अपेक्षा न करें, खर्च में वृद्धि होगी, विरोधियों से सावधान रहें।

धनु

साझेदारी में धोखा संभव है। आँख बन्द कर किसी पर भरोसा न करें, अधूरे कार्यों को पूरा करने में ही बुद्धिमानी है। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वालों के लिए समय अच्छा है, बच्चों एवं जीवन साथी से मतभेद उभर सकता है, जमीन-जायदाद के मामलों में उलझन बढ़ सकती है, संतान पक्ष से असंतोष होगा।

मकर

प्रतियोगी एवं उच्च शिक्षा हेतु प्रयासरत विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी, व्यर्थ की यात्राओं में पैसा एवं समय व्यर्थ न करें। स्वास्थ्य को गंभीरता से लें, गुस्से पर नियंत्रण रखें, आपकी मनःस्थिति से दूसरे लोग परेशान हो सकते हैं, वाणी पर संयम रखें, कार्य सम्पादन में आलस्य के कारण उदासीन रहेंगे।

कुम्भ

शत्रुओं से सावधान रहें, सगे-सम्बन्धियों से मतभेद उभर सकते हैं, किसी को पैसा उधार देना ठीक नहीं। घर में नवीनीकरण का कार्य हो सकता है, यात्रा योग है, किसी बाहरी सहायता से कार्य सिद्धि होगी, व्यवसायिक जीवन को निजी जीवन से दूर रखें। भाग्य की अपेक्षा पुरुषार्थ पर ज्यादा जोर दें और खर्च पर काबू रखें।

मीन

विरोधी आपकी छवि खराब कर सकते हैं। कर्म क्षेत्र का दायरा बढ़ेगा, व्यवसायिक यात्रा लाभ प्रदान करेगी। मधुमेह-लीवर रोग से परेशानियां बढ़ सकती हैं, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा, वाणी पर संयम आवश्यक, अहंकार आपको बड़ा नुकसान दे सकता है। नौकरी एवं व्यवसाय बदलने के लिहाज से समय अनुकूल है।

निर्देशिका का विमोचन

उदयपुर। फूल माली समाज की परिवार परिचय निर्देशिका का विमोचन गत दिनों मुख्य अतिथि जिला कलक्टर चेतन देवड़ा ने किया। विशिष्ट अतिथि सत्यप्रकाश खड़गावत, दयानंद सैनी, फूले राष्ट्रीय जागृति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोतीलाल सांखला, महापौर गोविन्द सिंह टांक, उपमहापौर पारस सिंघवी, फूल माली समाज हाथीपोल के अध्यक्ष टेकचंद दगदी व दूधपूरा फूल माली समाज के अध्यक्ष गणेशलाल वातरिया थे। समाज के प्रवक्ता महेश चंद्र गढ़वाल ने बताया कि बालिका दिवस पर समाज की पांच बालिकाओं का सम्मान किया गया। साथ ही 90 वर्ष से अधिक समाजजनों का अभिनंदन किया गया। इस दौरान दिनेश माली, हरकलाल माली, लोकेन्द्र चावड़ा, रेवाशंकर माली भी उपस्थित थे।

धूमधाम से मनाया मीणा का जन्मदिन

उदयपुर। सीडब्ल्यूसी सदस्य एवं पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा का 4 फरवरी को जन्मदिन कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक मनाया। दिनभर विभिन्न कार्यक्रम हुए। पूर्व प्रदेश सचिव पंकज कुमार शर्मा के नेतृत्व में अशोक तम्बोली, उमेश शर्मा, फिरोज अहमद शेख, गोपाल जाट, सुधीर जोशी, भगवान सोनी, संदीप गर्ग, भगवती प्रजापत सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने मीणा के सेक्टर 14 स्थित आवास पर उन्हें शुभकामनाएं दी। कार्यकर्ताओं ने उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना के साथ 51 किलो फूलों की माला, मेवाड़ी पगड़ी एवं उपरणा पहनाकर मुंह मीठा करवाया। तत्पश्चात् मीणा ने महाकालेश्वर मन्दिर में दर्शन किए। दोपहर पश्चात् वे आशाधाम आश्रम, अन्ध विद्यालय, महाराणा भूपाल हॉस्पिटल, थियोसोफिकल सोसायटी एवं सेक्टर 14 स्थित आश्रय सेवा संस्थान पहुंचे।

टीआरआई में ई-बुक्स का विमोचन

उदयपुर। जनजाति विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव शिखर अगवाल ने माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान(टीआरआई) का निरीक्षण किया। अग्रवाल ने टीआरआई संस्थान द्वारा तैयार की गई आदि महोत्सव जनजाति नृत्य पर आधारित ई-बुक्स का विमोचन भी किया। इसमें जनजाति कला और संस्कृति की जानकारी है। जनजाति आयुक्त जितेन्द्र कुमार उपाध्याय ने कार्यशाला की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कोरोना काल के दौरान भी जनजाति प्रतिभाओं के लिए ऑनलाइन कार्यशालाएं हुई थीं।

डायलिसिस यूनिट का शुभारम्भ

नाथद्वारा। 200 बेड वाले राजकीय उप जिला चिकित्सालय को राज्य विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सी पी जोशी व मिराज ग्रुप के सीएमडी मदन पालीवाल ने नई सौगातें दी। कार्यक्रम की शुरुआत तिलकायत इन्द्रदमन महाराज व विशाल बावा द्वारा डायलिसिस यूनिट के शुभारम्भ से हुई। कार्यक्रम में विमल प्रकाश चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा चिकित्सालय में किडनी रोगियों के लिए दो डायलिसिस यूनिट भेंट की गई। डायलिसिस व्यय राज्य सरकार तथा मंदिर मण्डल द्वारा वहन किया जाएगा। कार्यक्रम में विपिन मेहता व सुरेश लोढ़ा द्वारा बर्न आईसीयू भेंट की गई।

कार्यकारिणी ने ली शपथ

ललित नारायण डॉ. राकेश

उदयपुर। चित्रगुप्त सभा की नवीन कार्यकारिणी के निर्विरोध चुनाव हुए। सभा के वरिष्ठ सदस्य डॉ. गिरीशनाथ माथुर ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। कार्यकारिणी में ललित नारायण माथुर अध्यक्ष, नरेन्द्र प्रसाद माथुर उपाध्यक्ष, डॉ. राकेश माथुर मुख्य सचिव, अंकुर माथुर, सहसचिव आदि ने शपथ ली।

धार्मिक स्थलों को सीमेन्ट बैग भेंट

बांगड़सिटी(रास)। श्री फाउण्डेशन ट्रस्ट(श्री सीमेन्ट लिमिटेड, रास) समाज के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न क्षेत्रों में वर्षों से लगातार कार्य कर रहा है। ट्रस्ट द्वारा क्षेत्र के सार्वजनिक एवं धर्म स्थलों तथा गौशालाओं की भौतिक संरचना को बनाये रखने हेतु सहयोग के साथ सीमेन्ट सहयोग दिया जा रहा है। इसी क्रम में श्री तिलकेश्वर महादेव गौशाला भीमगढ़ में 300 सीमेन्ट बैग, हनुमान सेवा समिति रास में 100 सीमेन्ट बैग, रघुनाथ जी मंदिर बाबरा में 100 बैग, डींगाटोला धूणी भीमगढ़ में 30 बैग, जाकड माता फूलसागर करनोस में 100 बैग, श्रीरामदेव जी का मंदिर थोथीफूलसागर में 100 बैग, श्री श्याम मंदिर रामगढ़ करनोस में 80 सीमेन्ट बैग आदि स्थानों के जीर्णोद्धार हेतु भेंट किये गये। इस सहयोग हेतु क्षेत्र की सभी संस्थाओं ने श्री फाउण्डेशन ट्रस्ट, रास का आभार व्यक्त किया।

इंदिरा रसोई घरों का निरीक्षण

उदयपुर। शहर में संचालित 10 इंदिरा रसोई घरों में दोनों समय 4500 लोग भोजन कर रहे हैं। महज आठ रुपए में उन्हें पांच रोटी, दाल, सब्जी व अचार परोसा जा रहा है। इस भोजन की गुणवत्ता की जांच करने पिछले दिनों निगम आयुक्त टीम के साथ पहुंचे। उन्होंने भोजन का स्वाद चखा। जहां भी कमी दिखी उसे हाथों-हाथ दुरुस्त करवाया। आयुक्त हिम्मत सिंह बारहठ जिला परियोजना अधिकारी सेल सिंह सोलंकी व टीम के साथ इंदिरा रसोई घर पहुंचे। टीम ने एमबी हॉस्पिटल, चेतक सर्कल, मल्लातलाई, पारस तिराहा में संचालित रसोई घरों की व्यवस्था देखी।

रिक्लाइनर का पहला आउटलेट

उदयपुर। सोफा निर्माता रिक्लाइनर का पहला आउटलेट सेक्टर-3 में शुरू हुआ। शोरूम का शुभारम्भ उद्यमी कनकमल पोखरना ने किया। इस अवसर पर रिक्लाइनर के बिजनेस मैनेजर केशव कुमार, सेल्स हेड अली अहमद, प्रोपराइटर महेन्द्र पोखरना मौजूद थे। बिजनेस मैनेजर केशव कुमार ने बताया कि पहले आउटलेट में कंपनी उत्पाद सोफा चेयर, टीवी चेयर, वर्क टू होम चेयर आदि उपलब्ध होंगे।

ज्ञान की अग्रदूत है विद्यापीठ - राज्यपाल

उदयपुर। जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय, राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने गत दिनों जयपुर में राज्यपाल कलराज मिश्र से अनौपचारिक भेंट की। राज्यपाल ने विद्यापीठ द्वारा मेवाड़ के आदिवासी अंचलों में आजादी से पूर्व सर्वहारा वर्ग के शिक्षण-दीक्षण की सराहना की। उन्होंने कहा कि अज्ञानता का अंधेरा दूर करने में विद्यापीठ अग्रदूत है। उन्होंने स्व. पं. जनार्दनराय नागर को शिक्षा में अभिनव प्रयोगों व उनके प्रचार-प्रसार के लिए भी याद किया।

12 साल बाद खाना खा पाई सीता

उदयपुर। धौलपुर निवासी सीतादेवी 12 साल बाद खाना खा सकी। उसके जबड़े की हड्डी मस्तिष्क की हड्डी से जुड़ी होने एवं इस तरह के मामले कम ही होने से इतने समय तक ऑपरेशन संभव नहीं हुआ। यहां जीबीएच जनरल हॉस्पीटल में युवती का सफल ऑपरेशन किया गया। ग्रुप डायरेक्टर डॉ. आनन्द झा ने बताया कि सीता देवी(23) को परिजन पिछले दिनों बेड़वास स्थित जीबीएच जनरल हॉस्पीटल के दंत रोग विभाग में दिखाने पहुंचे। यहां विभागाध्यक्ष डॉ. वरदान माहेश्वरी के निर्देशन में सफल ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन में उनके साथ डॉ. मोनिका भारद्वाज, डॉ. राघवेन्द्र, डॉ. रजनीन्द्र शर्मा ने सहयोग किया। रोगी की अस्पताल से विदाई के समय डॉक्टरों की टीम, वार्ड इंचार्ज केसर शर्मा भी उपस्थित थीं।

वृद्धाश्रम स्थापना दिवस मनाया

उदयपुर। उदयपुर में तारा संस्थान द्वारा संचालित 'कृष्णा शर्मा आनन्द वृद्धाश्रम' के नौ वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि जिला कलक्टर चेतन देवड़ा ने बुजुर्गों का आशीर्वाद लिया और उनकी कुशलक्षेम पूछी। संस्थान अध्यक्ष कल्पना गोयल ने बताया 2012 में तारा संस्थान ने नेत्र शिविरों में आए बेसहारा बुजुर्गों को घर देने के उद्धेश्य से वृद्धाश्रम शुरू किया था। संस्थान सचिव दीपेश मित्तल ने बताया कि जिला कलक्टर का सम्मान कमला देवी अग्रवाल व वृद्धाश्रम आवासी सुमित्रा परिहार ने किया। संस्थान निदेशक विजय सिंह चौहान ने आभार जताया। वृद्धाश्रम बुजुर्ग रामचन्द्र कुमावत ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

पीएमसीएच में कीमोथैरेपी सेन्टर

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल भीलों का बेदला में विश्व कैंसर डे पर कीमोथैरेपी सेन्टर का उद्घाटन संस्थान के चेयरमैन राहुल अग्रवाल, प्रीति अग्रवाल, अमन अग्रवाल, पेसिफिक मेडिकल विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर एवं पीएमसीएच के प्रिंसिपल डॉ. ए पी गुप्ता, एडवाइजर टू चेयरमैन डॉ. डी पी अग्रवाल, शरद कोठारी कैंसर रोग विशेषज्ञ एवं बोनमेरो ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ डॉ. मनोज महाजन, कैंसर रोग सर्जन डॉ. सौरभ शर्मा, ग्रुप डायरेक्टर मेडिकल सर्विसेज डॉ. दिनेश शर्मा ने पूजा-अर्चना कर किया। चेयरमैन अग्रवाल ने बताया कि उच्च स्तरीय मेडिकल तकनीकों वाले इस कीमोथैरेपी सेन्टर पर किफायती एवं सुगम इलाज मिल सकेगा।

विपुल शर्मा ने पदभार संभाला

उदयपुर। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा नवपदस्थापित जनसम्पर्क अधिकारी विपुल शर्मा ने 5 फरवरी को सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय उदयपुर में पदभार संभाला। उन्होंने अपनी उपस्थिति उपनिदेशक डॉ. डॉ. कमलेश शर्मा को दी। इस मौके पर कार्यालय के सहायक लेखाधिकारी दिनकर खमेसरा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी लक्ष्मण सिंह चौहान, वीरलाल बुनकर, राकेश गुर्जर, विनय दवे, सुनील व्यास, राजसिंह, हीरालाल शर्मा तथा नवपदस्थापित जनसंपर्क अधिकारी के परिवार से आदित्य पांडे, सुचित्रा शर्मा, धर्मपत्नी रोमा शर्मा, पुत्र युग व भांजे विधान और विहान शर्मा भी मौजूद रहे। उनका पगड़ी-उपरना पहनाकर स्वागत-सम्मान किया गया।

एसबीआई की नई शाखा का शुभारम्भ

उदयपुर। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की आरएनटी मेडिकल कॉलेज परिसर में नवीन शाखा का उद्घाटन दक्षिणी राजस्थान के महाप्रबंधक शिवओम दीक्षित ने किया। प्रशासनिक कार्यालय, उदयपुर के उप महाप्रबंधक दिनेश प्रताप सिंह तोमर, क्षेत्रीय व्यावसायिक कार्यालय, उदयपुर के क्षेत्रीय प्रबन्धक अमरेन्द्र कुमार सुमन एवं बैंक के अन्य पदाधिकारी एवं आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल, डॉ. आर. एल. सुमन(अधीक्षक), डॉ. ए. के. खरे आदि मौजूद थे। महाप्रबंधक ने नारायण सेवा संस्थान को भी सीएसआर के तहत एक स्कूली बस भेंट की।

बुनकर पदोन्नत

उदयपुर। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग जयपुर ने आदेश जारी कर सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय उदयपुर के कनिष्ठ सहायक वीरालाल बुनकर को वरिष्ठ सहायक पद पर पदोन्नत किया गया। नवीन पद पर कार्यभार संभालने पर उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा, जनसम्पर्क अधिकारी विपुल शर्मा, सुनील व्यास, राजसिंह सहित सभी स्टाफ सदस्यों ने बुनकर को बधाई दी।

मुस्लिम महासंघ ने मनाया स्थापना दिवस

उदयपुर। मुस्लिम महासंघ का छठा स्थापना दिवस समारोह आर.एन.टी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल के मुख्य आतिथ्य एवं सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्ष एवं मंसूरी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष युनूस मंसूरी थे। इस अवसर पर ही लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से एडवोकेट के. आर. सिद्दीकी और मरहूम मोहम्मद छोटू कुरैशी के पुत्र तौसिफ कुरैशी को नवाज़ा गया। प्रवक्ता कमाल खान ने बताया कि मुस्लिम महासंघ लगातार 6 वर्षों से सद्भावना का संदेश देता हुआ आगे बढ़ रहा है। कार्यक्रम में प्रदेशाध्यक्ष हनीफ खान, प्रदेश उपाध्यक्ष सैयद दानिश अली, प्रदेश संयोजक जुबैर खान, आईटी सेल संयोजक यासिरा शेख, सम्भागाध्यक्ष तौकीर रज़ा, जिलाध्यक्ष मुज़ीबुद्दीन खान, इरफान मुल्तानी, शादाब खान भी मौजूद थे।

श्रीसीमेंट को 'सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता अवार्ड'

ब्यावर। दी एम्पलॉयर्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान(राजस्थान नियोक्ता संघ) ने गत दिनों जयपुर के होटल क्लार्क आमेर में अपना 57वां स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया। इसमें श्रीसीमेंट को 'सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता अवार्ड-2019' से नवाजा गया। जिसे उपमहाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) शरद भटनागर ने ग्रहण किया। समारोह के मुख्य अतिथि राज्य के उद्योग मंत्री परसादी लाल मीणा थे। कार्यक्रम में राजीव अरोड़ा-कोषाध्यक्ष ऑल इण्डिया प्रोफेशनल्स-कांग्रेस एवं अध्यक्ष फैडरेशन ऑफ राजस्थान एक्सपोर्ट्स तथा डॉ. समित शर्मा-डिविजनल कमिश्नर जयपुर व नियोक्ता संघ राजस्थान के अध्यक्ष एन. के. जैन भी उपस्थित थे। कम्पनी को अवार्ड मिलने पर पूर्णकालिक निदेशक पी. एन. छंगाणी, अध्यक्ष(वाणिज्यिक) संजय मेहता, संयुक्त अध्यक्ष(वाणिज्यिक)-अरविन्द खींचा, कारखाना प्रबंधक विनय सक्सेना ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

महिला खेल सप्ताह के पोस्टर का विमोचन

जयपुर। टेनिस बॉल क्रिकेट एसोसिएशन द्वारा विश्व महिला खेल दिवस के उपलक्ष्य में 8 से 14 मार्च तक महिला खेल-कूद सप्ताह का आयोजन किया जाएगा। आयोजन सचिव मिर्ज़ा मंजूर बेग़ के अनुसार इस दौरान महिलाओं की क्रिकेट, कबड्डी फुटबाल, बैडमिंटन, बॉल बैडमिंटन, हैंडबॉल, टेनिस बॉल क्रिकेट, बास्केटबाल, नेटबाल, बॉक्सिंग, हॉकी और खो-खो सहित 14 खेल स्पर्धाओं का आयोजन किया जाएगा। सभी खेल स्पर्द्धाएं चौगान स्टेडियम पर होंगी। राजस्थान टेनिस बाल क्रिकेट के चेयरमैन राजीव अरोड़ा ने महिला खेल सप्ताह के पोस्टर का विमोचन किया।

डॉ. मित्तल को 'ऑरेशन पुरस्कार'

उदयपुर। महाराणा भूपाल चिकित्सालय के चर्म रोग विभागाध्यक्ष डॉ. असित मित्तल को चर्म रोग की राष्ट्रीय संस्थान(आईएडीवीएल) द्वारा इस वर्ष प्रतिष्ठित बीएम अम्बाडी ऑरेशन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर चर्म रोग एवं खुजली से संबंधित आधुनिक शोध कार्यों के लिए चर्म विशेषज्ञों के 49वें राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रदान किया गया।

मधुकर अध्यक्ष, गौरांग उपाध्यक्ष

मधुकर दुबे

गौरांग सिंघल

उदयपुर। सीआईआई उदयपुर जोन के वार्षिक सत्र में वर्ष 2021 के लिए फ्यूजन बिजनेस सोल्यूशंस के संस्थापक और प्रबंध निदेशक मधुकर दुबे को राजस्थान उदयपुर जोन का अध्यक्ष बनाया गया। वोलकेम इंडिया लिमिटेड के निदेशक गौरांग सिंघल को सीआईआई उदयपुर जोन का उपाध्यक्ष नामित किया गया है।

राजानी और चुघ उपाध्यक्ष

हरीश राजानी

राजेश चुघ

उदयपुर। पूज्य जेकबआबाद सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष प्रतापराय चुघ ने पिछले दिनों अपनी कार्यकारिणी का विस्तार किया। पंचायत के महासचिव वाशदेव राजानी ने बताया कि उपाध्यक्ष हरीश राजानी, भगवान छाबड़ा, खानचंद मंगवानी, किशोर जाम्बानी, अशोक पाहुजा, राजेश चुघ, हरीश सिधवानी, सचिव पुरुषोत्तम तलरेजा, किशोर पाहुजा, अशोक जाम्बानी, गिरीश राजानी, सुरेश चावला कोषाध्यक्ष रतन कालरा संगठन सचिव श्याम कालरा और प्रवक्ता मोहन साधवानी को नियुक्त किया गया।

पण्ड्या सदस्य मनोनीत

उदयपुर। पूर्व उपजिला प्रमुख लक्ष्मीनारायण पण्ड्या को राजस्थान अनुसूचित जनजाति परामर्शदात्री परिषद में सदस्य मनोनीत किया गया है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अनुशंसा एवं राज्यपाल कलराज मिश्र की स्वीकृति पर शासन सचिव, राजस्थान सरकार द्वारा यह मनोनयन किया गया।

डॉ. मेघवाल ब्रांड एम्बेसेडर

जयपुर। प्रसिद्ध दमा रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. के. मेघवाल को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, नई दिल्ली ने अपना ऑनरेरी प्रोफेसर एवं ब्रांड एम्बेसेडर नियुक्त किया है। उनका कार्यकाल दो वर्ष का होगा। वे यूरोपियन रेस्पाइरेटरी सोसायटी, स्वीट्जरलैण्ड के 'गोल्ड मेंबर' भी हैं।

भाणावत मुख्य निर्णायक

उदयपुर। मेवाड़ फिलटैली सोसायटी उदयपुर के संस्थापक-अध्यक्ष करेंसी मैन विनय भाणावत को वर्ल्ड रिकॉर्ड्स इंडिया, वर्ल्ड अमेजिंग रिकॉर्ड्स एवं जिनियस फाउण्डेशन के अध्यक्ष पावन सोलंकी ने राजस्थान के मुख्य निर्णायक पद पर नियुक्त किया है।

सफलता पर बधाई

उदयपुर। कार्तिकेय राठौड़, ऋषभदेव(पुत्र श्रीमती उषा-कैलाश बी. खटोड़) के प्रथम प्रयास में चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट(सीए) बनने पर मित्रों व परिजनों ने उन्हें बधाई प्रेषित की है।

श्रीराम मन्दिर निधि समर्पण

सिंघल परिवार ने दिए 11 करोड़

उदयपुर। गांव-ढाणियों से लेकर नगर-शहर तक श्रीराम मंदिर निधि समर्पण का दौर जारी है। श्री राम जन्मभूमि आंदोलन के कर्णधार रहे अशोक सिंघल परिवार ने 6 करोड़ का द्वितीय चेक अयोध्या में बनने वाले श्रीराम मंदिर के लिए भेंट किया। स्व. अशोक सिंघल परिवार की तरफ से मंदिर निर्माण के लिए 11 करोड़ रुपए सहयोग देने का संकल्प लिया था, जिसमें 5 करोड़ रुपए का प्रथम चेक अरविंद सिंघल द्वारा पूर्व में दिया गया था। शेष राशि 6 करोड़ रुपए का दूसरा चेक 17 फरवरी को प्रदान किया गया। सिंघल परिवार श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन में वर्षों से सक्रिय रहा है। स्व. अशोक सिंघल ने विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष पद पर रहते हुए इसमें अग्रणी भूमिका निभाई थी। उन्हीं के सपनों को साकार होता हुआ देख उदयपुर के सिंघल परिवार द्वारा मंदिर निर्माण में 11 करोड़ की राशि देने का संकल्प लिया।

गीतांजली ने दी 50 लाख की राशि

गीतांजलि विश्वविद्यालय की ओर से उद्योगपति जे पी अग्रवाल ने 50 लाख रुपये अर्पित किए। इस मौके पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक प्रमुख श्रीवर्धन विभाग, संघचालक हेमेन्द्र श्रीमाली, महानगर संघचालक गोविन्द अग्रवाल व उद्योगपति अरविन्द सिंघल भी मौजूद थे।

टेक्नो मोटर्स ने दिए 21 लाख

टेक्नो मोटर्स, उदयपुर के निदेशक दिनेश कावड़िया अयोध्या में निर्माणाधीन भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण में सहयोग स्वरूप 21 लाख का चैक भेंट करते हुए।

एनएसएस द्वारा 11 लाख

श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल और निदेशक वंदना अग्रवाल 11 लाख रुपए की राशि का चेक नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया को सौंपते हुए। साथ में महापौर जीएस टांक और उपमहापौर पारस सिंघवी।

महिला कांग्रेस में नियुक्तियां

नजमा मेवाफरोश सीमा चौर्डिया सीमा पंचोली

उदयपुर। महिला कांग्रेस की प्रदेश अध्यक्ष रेहाना रियाज चिश्ती ने महिला कांग्रेस जिला अध्यक्षों की सूची जारी की। इसमें उदयपुर शहर से महिला कांग्रेस की निवर्तमान जिला अध्यक्ष नजमा मेवाफरोश और देहात से महिला कांग्रेस की निवर्तमान जिला अध्यक्ष सीमा चौर्डिया को फिर से जिम्मेदारी दी गई है। साथ ही प्रदेश कार्यकारिणी में सीमा पंचोली को प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया है।

डॉ. नाहर व मेहता ने किया पद ग्रहण

उदयपुर। गीतांजलि यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर आर. के. नाहर ने प्रो-चांसलर एवं प्रोफेसर एफ.एस. मेहता ने वाइस चांसलर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। इस अवसर पर एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, रजिस्ट्रार भूपेन्द्र मंडलिया एवं यूनिवर्सिटी में कार्यरत प्रोफेसर व स्टाफ मौजूद थे।

संवेदना

उदयपुर। ठा. श्री प्रणवीर सिंह करेली का 27 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र धर्मवीर सिंह व चंद्रवीर सिंह सहित सम्पन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री बंशीलाल जी पानेरी, निवासी सेक्टर 14 का 27 जनवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती श्यामा देवी, पुत्र लक्ष्मीशंकर, महेशचन्द्र व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री हस्तीमल जी गांग जावद वाले का 12 फरवरी को संथारापूर्वक देहावसान होगया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र अशोक व संजय गांग तथा पुत्री सुधा संघवी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों एवं भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती शीला सोनी धर्मपत्नी स्व. सनत कुमार जी(वेवार) का 16 फरवरी को आकस्मिक देहान्त हो गया। वे अपने पीछे शोकसंतप्त पुत्र अखिलेश, यज्ञेश सोनी, पुत्रियां डॉ. अनुराधा, डॉ. अदिति सहित उनका सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। पूर्व पार्षद एवं भाजपा नेता श्री शशिकांत जी बनोरिया का 11 फरवरी को निधन हो गया। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे। वे अपने पीछे पुत्र शेखर व प्रफुल्ल बनोरिया तथा पुत्री वंदना और उनका भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके निधन पर विधायक गुलाबचंद कटारिया, फूलसिंह मीणा, शहर भाजपाध्यक्ष रविन्द्र श्रीमाली, वरिष्ठ नेता प्रमोद सामर, उपमहापौर पारस सिंघवी सहित अनेक भाजपा कार्यकर्त्ताओं ने शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्रीमती छगन देवी सिरोया का 2 फरवरी को देवलोकगमन हो गया। वे 103 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्रवधू मंजू सिरोया(स्व. गणेशलाल), पुत्र श्याम सिरोया, वीरेन्द्र सिरोया, पुत्रियां शांता देवी, प्रेमदेवी, बसन्ती देवी, कैलाश देवी व मंजू देवी सहित पड़पौत्र-पौत्रियों, पड़दोहित्र-दोहित्रियों एवं भाई-भतीजों का वृहद एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। प्रसिद्ध चिकित्सक एवं आरएनटी मेडिकल कॉलेज के पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. पी. सी. मेवाड़ा का 11 फरवरी को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती शोभा देवी पुत्र डॉ. दीपेन्द्र सिंह व रणजीत सिंह, पुत्री डॉ. आरती एवं भाई-भतीजों व पौत्र-पौत्रियों का समृद्ध एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल सहित स्थानीय चिकित्सा जगत ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्रीमती पवन देवी मेहता धर्मपत्नी स्व. जसवंत लालजी मेहता का 16 फरवरी को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र अनिल, योगेश तथा पुत्रियां निर्मला जारोली व रचना गलुण्डिया तथा उनका भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्री गणेश एज्यूकेशन सोशल एण्ड इन्वायरमेंट सोसायटी के संस्थापक श्री भागचंद जी बंसल का 17 फरवरी को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी, पुत्र संजय बंसल व पुत्री रेखा अग्रवाल तथा उनका समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

With Best Compliments

SAH POLYMERS LIMITED

(Manufacturer of HDPE/PP Laminated & Unlaminated Woven Fabric, Sacks and F.I.B.C.)

E-260-261, M.I.A., Madri, Udaipur - 313003
Ph. : 0294-2490242, 2493889, TeleFax : 0294-2490534
E-Mail : info@sahpolymers.com, Website : www.sahpolymers.com

ARAVALI
GROUP - INDIA

AN ISO 9001:2008
Certified co.

Aravali Minerals & Chemical Industries Pvt. Ltd.

Quarry Owner, Processor, Exporter and Supplier of Indian Onyx, Marbles, Granites & other Natural Stones from Udaipur

MINERAL STONE CONSTRUCTION

- A wonder of nature- the Onyx Marble of Aravali, is most sought after by Architects and Master builders from all over the world for its distinct creamy white and subtle pink colors embellished with nature's own patterns.
- Aravali Onyx, with its fine grain texture and translucency, symbolises supreme luxury, extreme sensitivity and a high degree of aesthetics.
- Aravali Minerals & Chemical Industries is proud to uncover and present before connoisseurs across the globe, this dplendour of nature.

6 Continents 36 Countries, More then 400 Customers

B-132, Mewar Industrial Area, Madri, Udaipur-313003
Tel: 2490675, 2491357, 2491675
OFFICE:SP-1, Udhyog Vihar, Sukher, Udaipur-313003
E-mail: aravali.sunil@yahoo.com, aravali1975@gmail.com
Website: www.aravalionyx.com

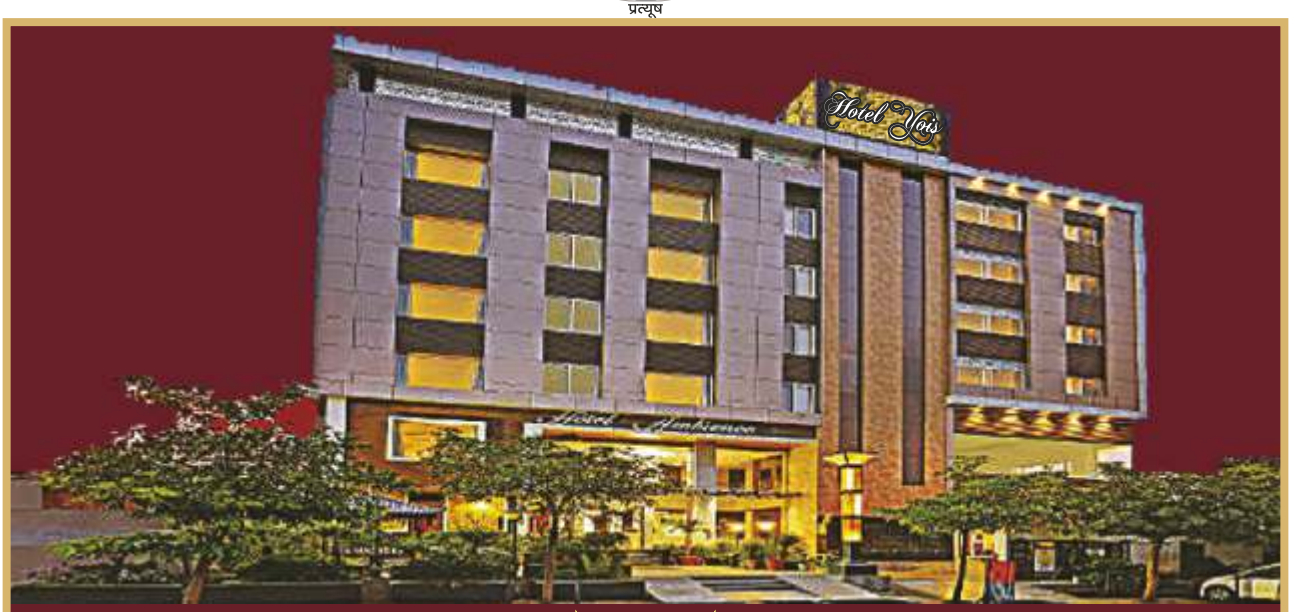

Hotel Yois
A unit of bhmpl
Elegant
Multi-Functional Hall

The Occasion
Wedding & Special Events

Silver Spoon
Multi-cuisine Restaurant ■ Pure Veg.

The Regal
Multi-Functional Garden

Plot No.8 Nr. Mahila Police Thana, 100 FEET Road, Roop Nagar Bhuwana,
Opp. The Occasion Wedding & Special Event Garden,
Udaipur 313001 Rajasthan, India.
Contact : +91 294 2980079/ 2980081, 8239466888
email: hotelambienceudaipur@gmail.com website: www.hotelambienceudaipur.com

Founded on Trust. Envisioning Infinite Possibilities.

Becoming a leading Agri Chem company took us foresight, acumen and ability. But it all started with our foundation of trust. Our principles of complete business transparency and an adherence to the highest standards have made us global experts and a partner of choice in our business. We are confident that our belief in trust will lead us to infinite possiblities by leveraging our capabilities across the Agri Sciences value chain by providing integrated and innovative services & solutions by partnering with the best.

OUR BUSINESS PRINCIPLES

ADAPTABILITY
Constantly transforming ourselves like water, we are nimble footed and highly responsive to change.

TRUST
We work with integrity of purpose, honesty in action and fairness in all our dealings.

SPEED
Blazing ahead, we constantly strive to work with speed in the way we observe, think and act.

INNOVATION
The constant quest for horizon, the never ending search for a better, newer way to do things. Innovation is a way of life for us.

Inspired by Science

PI Industries Ltd

www.piindustries.com | info@piindustries.com